1

मसीह, भविष्यद्वक्ताओं और स्वर्गदूतों से श्रेष्ठ (भाग 1)

(1:1--14)

इब्रानियों की पुस्तक का अतुलनीय आरम्भ (1:1—2:4) मसीह को उसके ईश्वरीय स्वभाव और महिमा में दिखाता है। वास्तव में वह स्वर्गदूतों और बीते युगों के भविष्यद्वक्ताओं से श्रेष्ठ है। जिस कारण पुत्र के द्वारा प्रस्तुत किए गए उद्धार को नज़रअन्दाज़ करने वाला अपने आपको अनन्त विनाश में पाएगा। वास्तव में इब्रानियों की पूरी पुस्तक का मुख्य डिज़ाइन यह दिखाना है कि नई वाचा सबसे ऊपर है और पुरानी वाचा का स्थान ले लेती है।

पहले तीन अध्यायों में मसीह का व्यक्तित्व ऐसे भर देता है जैसे समुद्र को पानी। हमारे प्रभु की महानता के कारण मसीही लोगों को जिनके नाम यह पुस्तक लिखी गई थी, अपने विश्वास में बने रहने और सुसमाचार को अपने से न हटने देने का आग्रह करती है (2:1-3)। संदेश से बह जाने से संदेश के देने वाले से बह जाना होगा। क्योंकि संदेश और संदेश के देने वाले को अलग नहीं किया जा सकता। लेखक के अनुसार "मसीह बनाम शिक्षा" जैसी कोई बात नहीं है क्योंकि मसीह और उसकी शिक्षा साथ-साथ चलते हैं। यदि उसके संदेश को सही ढंग से समझना है तो संदेश देने वाले को उच्च सम्मान दिया जाना आवश्यक है।

इन आरम्भिक वाक्यों में लेखक ने मूसा और भविष्यद्वक्ताओं के अधूरे प्रकाशन के ऊपर पुत्र के द्वारा दिए गए प्रकाशन की पूर्ण श्रेष्ठता को दिखाया है। यीशु के द्वारा दिया गया परमेश्वर का प्रकाशन अन्तिम वचन अर्थात वह सर्वश्रेष्ठ प्रकाशन है जो परमेश्वर की ओर से मिला है जिसकी ओर पुराने नियम के सभी अन्य स्वर ध्यान दिलाते हैं। पुत्र के संदेश से पहले दिया गया संदेश मसीह के द्वारा परमेश्वर पिता के इस अन्तिम स्वर की तरह हमारा ध्यान खींचने वाला होना चाहिए।

इसलिए अनुमान के द्वारा लेखक ने दिखाया कि कोई भी धार्मिक संदेश जो नये नियम के दिनों के बाद दिखाई दिया हो उसे "ईश्वरीय" नहीं कहा जा सकता। मसीह के द्वारा दिए गए इस अन्तिम प्रकाशन को स्वर्गदूतों के द्वारा भी बदला नहीं जा सकता है (गलातियों 1:6-9)। यह "विश्वास जो एक ही बार" दिया गया था है, जिसका अर्थ है कि यह "सदा के लिए" है (यहूदा 3; NLT)। मसीह का प्रकाशन उस प्रकाशन से अलग है जिसे परमेश्वर ने पुराने नियम के समयों में भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा दिया। "प्रगतिशील प्रकाशन" पूरे पुराने नियम में और नये नियम में मिलता रहा है, परन्तु मसीह के साथ समाप्त हो गया।

मसीह के प्रकाशन में उसके प्रेरितों और नये नियम के समय के परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए अन्य लोगों के लेखों से घिरा है। उसने उन्हें भेजा, और उसने उन्हें प्रेरणा देने के लिए पवित्र

आत्मा को भेजा; इस कारण जो कोई उन्हें ग्रहण करता है, वह मसीह को ग्रहण करता है (लूका 10:16)। मसीह के द्वारा अब हमारे पास अन्त में "कुछ उत्तम" है, जिसका स्थान इस संसार के रहते कोई दूसरा नहीं ले सकता।

मसीह, भविष्यद्वक्ताओं से श्रेष्ठ (1:1-3)

परमेश्वर ने बात की है (1:1, 2)

[1]पूर्व युग में परमेश्वर ने बाप-दादों से थोड़ा-थोड़ा करके और भांति-भांति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें कर। [2]इन दिनों अन्त में हमसे पुत्र के द्वारा बातें कीं, ...

आयत 1. इस महान पुस्तक का आरम्भ ईश्वर के सबसे बड़े प्रकाशन के तथ्य से होता है: **परमेश्वर ने बातें कीं।** परमेश्वर ने बाइबल में अपने वचन के द्वारा और अपने पुत्र यीशु के द्वारा मनुष्य से बातें की हैं और विश्वास का आधार यही सच्चाई है। हमारे मनों के लिए यह जानना कितना प्रोत्साहित करने वाला है कि परमेश्वर ने हम से बातें की हैं! वह जो सारी सच्चाई और सारे प्रकाशन का देने वाला है, उसने हमारे साथ बात की है। "परमेश्वर" (*theos*) शब्द से पहले निश्चित उपपद (*ho*) है, जो यह संकेत दे सकता है कि वह "the God" है जिसे पाठक पुराने नियम के लेखों से जानते थे और पहले ही उसकी आराधना कर रहे थे।

Theos शब्द का अर्थ है "श्रेष्ठ हस्ती जो मनुष्यों के मामलों में असाधारण रूप में काम करती है। ..."[1] देवताओं से हर चीज़ को उसके सही स्थान में लगाने की अपेक्षा की जाती थी।[2] पुराने नियम में परमेश्वर को ऐलोहीम (*'elohim*), सर्वशक्तिमान या जिसके पास पूर्ण अधिकार है, के रूप में माना जाता था। बाद में उसने अपने आपको मूसा पर "याहवेह" (YHWH) "जिसका अस्तित्व है," या "परमहस्ती" के रूप में प्रकट किया। जिसका अर्थ है कि वह सनातन "मैं हूं" है और बाकी सब कुछ उसी से निकला है (निर्गमन 3:14; 6:3)।

पूर्व युग में "बीते समय में है" (KJV) इस वाक्यांश का मूल अर्थ "पहले के" या "प्राचीन समयों में" है। पूरे पुराने नियम के काल के विवरण के रूप में हम इस दो शब्दों वाले वाक्यांश पर विचार कर सकते हैं।

यहूदी लोग मलाकी के बाद की लिखी जाने वाली किसी भी पुस्तक को प्रामाणिक रूप में स्वीकार नहीं करते थे। उदाहरण के लिए वे अपोक्रिफ़ा को नकारते थे।[3]

पुराने नियम के **भविष्यद्वक्ताओं** ने वैसे ही लिखा जैसे परमेश्वर ने उन्हें निर्देश दिया। उन्हें पवित्र आत्मा के द्वारा प्रेरणा दी जाती थी (2 पतरस 1:20, 21), जो उनके लिखने के समय उसकी अगुआई के द्वारा जन्म पाते थे। जो वे बोले थे ऐसा नहीं है कि उन्हें अपनी हर बात की समझ होती हो परन्तु वे लगन से खोज करते या अध्ययन करते थे। परन्तु वे यह देखने के लिए कि भविष्यद्वाणियों में किस काल के समय की पूर्व छाया है, अपनी लिखी बातों को ध्यान से खोजते या उनका अध्ययन करते थे (1 पतरस 1:10, 11)।

द एम्पलीफाइड बाइबल (AB) जिसमें व्याख्याएं और संस्करण हैं, में आयत 1 के लिए

लिखा है: ''कई अलग-अलग प्रकाशनों [जिनमें से प्रत्येक सच्चाई का एक भाग ठहराता है] और अलग-अलग ढंगों से परमेश्वर ने पहले के [हमारे] पूर्वजों से और भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें कीं।'' थॉमस जी. लॉन्ग ने आयत के अन्तिम भाग का अनुवाद किया है, ''कई खण्डों में और कई रूपों में।''[4] इस वाक्यांश का अनुवाद ''विधि समयों में'' (KJV), ''विभिन्न समयों में और विभिन्न ढंगों से'' कई समयों में या विभिन्न ढंगों से (NIV) और ''कई अलग-अलग झलकों से'' फिलिप्पस किया है (Phillips)।

मसीह के आने से पहले परमेश्वर का अनन्त पवित्र शास्त्र केवल खण्डित प्रकाशनों में दिया जाता था। *Polumerōs* का अर्थ है ''कई भागों'', ''अंशों,'' ''थोड़ा-थोड़ा करके है'' इसका अर्थ यह हुआ कि भागों, टुकड़ों या खण्डों में जो भी दिया गया, वह अधूरा है; परन्तु जैसा कि ब्रूक फॉस वेस्टकोट का अवलोकन है, ''पुत्र मसीह में प्रकाशन और अस्तित्व और आकार दोनों में।''[5] यह आत्मिक दानों के उद्देश्य से मेल खाता है, जो भागों में प्रकाशन का देना था (1 कुरिन्थियों 13:8-10)। इस वचन का AB का अनुवाद भविष्यद्वक्ताओं के लिए प्रेरणा के सबसे उच्च विचार का भी दावा करता है कि परमेश्वर मनुष्य के साथ उनके द्वारा बातें करता था। एफ. एफ. ब्रूस ने इसी सच्चाई को इस प्रकार से व्यक्त किया है: ''याजक हो या भविष्यद्वक्ता, साधु हो या गाने वाला अलग-अलग ढंगों से उसके प्रवक्ता थे; फिर भी मसीह के आने से पहले कई युगों में एक के बाद एक काम और प्रकाशन के विभिन्न माध्यम कुल मिलाकर उसके बराबर नहीं हैं, जो परमेश्वर करने को था।''[6]

इस अर्थ की सच्चाई यह है कि परमेश्वर ने पुराने नियम का धर्मशास्त्र देने के समय **थोड़ा थोड़ा करके और भांति-भांति से** बातें कीं। कई बार उसने याजकों, स्वप्नों, घटनाओं और इतिहास के द्वारा बातें कीं। कई बार भविष्यद्वक्ता को संदेश लिखना होता था और परमेश्वर कई बार भविष्यद्वक्ता के बिना बोले केवल संकेतों के द्वारा ही बात कर लेता था।

परमेश्वर ने इस्राएल या पुरखाओं (**बाप—दादाओं**) से एक लम्बी लगातार बात नहीं की, बल्कि अलग-अलग समयों, स्थानों और खण्डों में बातें की। ऐसे समय थे जब ''यहोवा का वचन दुर्लभ'' और ''दर्शन कम'' मिलता था (1 शमूएल 3:1)। तौभी इस सब को इकट्ठा मिलाने पर, सब में मेल है। क्यों? क्योंकि यह उसी ''आत्मा'' की प्रेरणा से लिखा गया था, जो एक परमेश्वर की ओर से बात करता है। इसलिए पुराने और नये नियमों को मनुष्यजाति को प्रकाशन के साथ जोड़ा गया है। और दोनों प्रकाशनों की बातें करने की आवश्यकता नहीं है, चाहे ये दो वाचाएं हैं।

आयत 2. इन अन्तिम दिनों में या ''इन दिनों के अन्त में'' (ASV) वाक्यांश का अर्थ हाल में, से कहीं अधिक है। इस वाक्यांश का अर्थ है कि अन्तिम युग का आरम्भ हो चुका है। प्रेरिताई वाले लेखकों ने अपने समय की ''अन्त के दिन'' (प्रेरितों 2:17; याकूब 5:3), ''इस अन्तिम युग'' (1 पतरस 1:20) या ''पिछले दिनों'' (यहूदा 18) के रूप में बात की। जिस युग में हम इस समय रह रहे हैं वह अन्तिम युग है। यह यीशु के स्वर्ग में वापस जाने और आत्मा को भेजने के समय से है। इन अन्तिम दिनों का आरम्भ यीशु के पुनरुत्थान के दिन के बाद वाले पिन्तेकुस्त के दिन हुआ था और ये दिन उसके द्वितीय आगमन तक रहेंगे।

इसलिए ''अन्तिम दिनों'' अभिव्यक्ति का इस्तेमाल यहां मसीहा के युग के लिए हुआ है;

इसके बाद कोई हज़ार वर्ष का युग नहीं होगा, नहीं तो ये अन्तिम दिन नहीं हो सकते। जैक पी. लुइस ने लिखा है कि ''इन्हें'' अन्तिम दिन कहकर लेखक ने ''इन दिनों को अपने समय के साथ मिलाया'' था।[7] अन्तर *पिछले समयों* के बीच है जब परमेश्वर भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें करता था और *इस अन्तिम युग,* जिसमें एक ''आरम्भिक'' है और दूसरा ''अन्तिम ।'' संदेश सर्वशक्तिमान परमेश्वर की ओर से अन्तिम और निर्णायक है।[8] इसलिए हमें किसी और की उम्मीद नहीं रखनी चाहिए। ''पुरानी के विपरीत'' नई वाचा ''अन्तिम और पक्की है क्योंकि इसका नेतृत्व, इसकी याजकाई और इसका राज्य विलक्षण रूप में उसका है, जो अनादि पुत्र है।''[9] मसीह द्वारा दिए गए प्रकाशन के बाद किसी और प्रकाशन के लिए विशेष रूप में कोई स्थान नहीं है। पुरानी और नई दोनों वाचाओं का देने वाला परमेश्वर है परन्तु उसने अन्तिम वाचा में अलग ढंग से बात की है।

भविष्यद्वक्ताओं और पुत्र दोनों के द्वारा परमेश्वर के बातें करने के लिए क्रिया के यूनानी की सामान्यकाल का इस्तेमाल करके इब्रानियों के नाम पत्री यह सुझाव देती है कि परमेश्वर अब बात नहीं कर रहा है। ब्रूस ने सही टिप्पणी की है, ''ईश्वरीय प्रकाशन की कहानी मसीह तक प्रगति की कहानी है, परन्तु उसके आगे कोई प्रगति नहीं है।''[10] मनुष्यजाति के लिए परमेश्वर के अन्तिम प्रकाशन के रूप में नये नियम का महत्व ठहराने के लिए यह सबसे महत्वपूर्ण है। इस महत्वपूर्ण सच्चाई से इनकार करने का अर्थ यह दावा करना है कि किसी में एक नई बाइबल देने या उसमें कम से कम जोड़ने की योग्यता है, जो हमारे पास पहले से है!

अतीत के स्वर यीशु से कम बताए गए हैं। इसमें स्वर्गदूत (1:4—2:18) मूसा (3:1—4:7) यीशु (4:8-13) हारून की याजकाई वाले याजक (4:14—7:28) शामिल हैं। लेखक ने एक मानवीय घटक की अनुमति दी परन्तु पुराने नियम में वास्तव में बोलने वाला परमेश्वर था (देखें 3:7; भजन संहिता 95:7 से लिया गया)। मसीह द्वारा परमेश्वर की प्रेरणा को इतना ही ऊंचा देखा गया जिसमें उसने कहा कि पुराने नियम का वचन ''परमेश्वर ने तुम से कहा'' था (मत्ती 22:31, 32)। इसके अलावा यूहन्ना 10:35 में यीशु ने पवित्र शास्त्र की जीवित सामर्थ की ओर ध्यान दिलाया जब उसने कहा, ''जिनके पास परमेश्वर का वचन पहुंचा (और पवित्र शास्त्र की बात असत्य नहीं हो सकती)।'' परमेश्वर का वचन सदा तक रहता है। यह हमेशा प्रासंगिक और प्रभावकारी है।

जो कुछ परमेश्वर ने पुराने नियम के समयों में कहा था उसे इस पुस्तक के लेखक और आरम्भिक मसीही लोगों द्वारा LXX में से पढ़ा जाता था। यह तथ्य इस बात का संकेत है कि बाइबल का वचन सही ढंग से अनुवाद होने पर, उस वचन को अपने लोगों और संसार के परमेश्वर की बातें करने के रूप में देखा जाना चाहिए। परन्तु यह विचार अनुवाद की प्रक्रिया या किसी आधुनिक या प्राचीन संस्करण के लिए ईश्वरीय प्रेरणा का दावा नहीं करता; हम सौ बातों की एक बात को मान लें कि सारी सच्चाई का अन्तिम रूप में देने वाला केवल एक ही है।

जो कुछ प्रेरितों ने सिखाया उस में मसीह की शिक्षा में से जोड़ा नहीं गया बल्कि यह वही था जिसका अधिकार पहले से स्वर्ग में दिया गया था और इसे प्रभु की ओर से माना जाना था। प्रेरितों की सारी शिक्षा वही थी जो यीशु के अपने मुंह से निकली थी (मत्ती 10:19, 20, 40)। ह्यूगो मेकोर्ड ने मी 16:19 का यूनानी अनुवाद प्रेरितों को पृथ्वी पर जो पहले से बांधा गया था उसे

स्वर्ग में बांधे जाने की बात करते हुए किया।[11] यह किसी भी प्रकार से पुराने नियम के लेखों के महत्व को कम करना नहीं है क्योंकि पुराने नियम की वाचा के उद्धरण और हवाले इब्रानियों की पूरी पुस्तक में फैले हुए हैं, इन संकेतों के अनुसार परमेश्वर इन लेखों के द्वारा बातें कर रहा था।

मसीह के आने के संकेत उत्पत्ति 3:15; 12:1-3; 49:10 में दे दिए गए थे।[12] व्यवस्थाविवरण 18:15 में (प्रेरितों 3:22 में) पतरस द्वारा उद्धृत एक वचन और भी स्पष्ट हो गया, जब घोषणा हुई कि एक नया नबी मूसा की जगह आने वाला था। बाद में मसीहा के काम और प्रकृति और स्पष्ट कर दिए गए। भजन संहिता 22:14-18 क्रूस पर दिए जाने का भविष्यद्वाणी का चित्रण किया गया। भजन संहिता 16:8-11 में जो कि प्रेरितों 2:25-28 में पतरस द्वारा उद्धृत की गई भविष्यद्वाणी है, मसीह के पुनरुत्थान की पूर्व घोषणा की गई।

परमेश्वर का पूर्ण प्रकाशन अर्थात उसके स्वभाव, सामर्थ और इच्छा का पता केवल यीशु मसीह के द्वारा चलता है (यूहन्ना 10:30; 14:9; 17:3-8)। इसी कारण नया नियम पूरा होते ही सारे प्रकाशन का अन्त हो जाता है। मसीह ने आकर प्रेरितों पर परमेश्वर को प्रकट किया। मसीह के ऊपर उठाए जाने के बाद उसने आश्चर्यकर्मों के द्वारा प्रकाशन के पूरा होने और प्रेरितों के वचनों की पुष्टि करने के लिए पवित्र आत्मा को भेजा (मरकुस 16:20; यूहन्ना 16:12, 13; इब्रानियों 2:1-4)। यह कहना कि आज प्रकाशन मिलते रहना आवश्यक है, यह संकेत देना है कि परमेश्वर ने मसीह के द्वारा अन्त में बातें नहीं कीं!

उद्धार दिलाने वाले विश्वास का लक्ष्य पाने के लिए आश्चर्यकर्म और अन्तिम प्रकाशन साथ-साथ चलते हैं (मरकुस 16:15-20; यूहन्ना 20:30, 31)। "आने वाले युग की सामर्थों" का स्वाद चखकर (इब्रानियों 6:5) आरम्भिक प्रेरित लोग "अनन्त युग" के साथ आंशिक रूप में भाग लेते थे, जिसमें उन से अधिक शक्तियां हमारे पास होंगी।

पुरानी और नई वाचाओं के बीच इन अन्तरों पर ध्यान दें:[13]

पुरानी: भविष्यद्वक्ता	नई: मसीह
परमेश्वर द्वारा लोगों को बुलाया जाता	परमेश्वर पुत्र
कई भविष्यद्वक्ता	एक पुत्र
खण्डित और अधूरा संदेश	अन्तिम और सम्पूर्ण संदेश

परमेश्वर ने अब **हम से पुत्र के द्वारा बातें की हैं।** यहां अनुवाद हुआ शब्द "बातें कीं" (***laleō***) का इस्तेमाल इब्रानियों में कई बार ईश्वरीय प्रकाशनों के लिए किया गया है (2:2, 3; 3:5; 7:14; 9:19; 11:16; 12:24, 25)। यहूदा 3 इसी अवधारणा की बात करता है, "विश्वास जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था।"

इस जीवन में परमेश्वर के निकट कोई उसके अनादि पुत्र के द्वारा हो सकता है। पिता तक पहुंच का एकमात्र मार्ग पुत्र के द्वारा है (यूहन्ना 14:1-6)। परमेश्वर ही है जिसने पुराने नियम

के द्वारा बातें कीं और जो आज भी नये नियम में बातें करता है। पौलुस के पत्रों में "प्रभु के वचन" में वे बातें हैं, जो यीशु ने पहले सिखाई थीं (1 थिस्सलुनीकियों 1:8; 4:15)। "मैं नहीं, वरन प्रभु" के आज्ञा देने की बात अपने आप में यह भी "प्रभु का वचन" होने का संकेत देती है (1 कुरिन्थियों 7:10; देखें 14:37)।

परमेश्वर ने जैसा कि निर्गमन 3:6 में लिखा है और बाद में यीशु द्वारा LXX से उद्धृत किया और यह कहते हुए मूसा से बातें कीं, "परन्तु मरे हुओं के जी उठने के विषय में क्या तुम ने यह वचन नहीं पढ़ा, जो परमेश्वर ने तुम से कहा कि *मैं अब्राहम का परमेश्वर, और इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हूं?* वह तो मरे हुओं का नहीं, परन्तु जीवतों का परमेश्वर है।" यह निर्णायक रूप में दिखाता है कि परमेश्वर इब्रानी धर्मशास्त्र के उचित अनुवाद के द्वारा पहली सदी के लोगों से बात कर रहा था।

आज वह हम से उसी प्रकार से अर्थात अपने पुत्र के द्वारा और अपनी प्रेरणा से दिए गए प्रेरितों और उनके साथियों के लेखों के द्वारा बातें करता है। उसका वचन हमारे पास कई संस्करणों के योग्य अनुवादों के द्वारा पहुंचा है। यीशु और प्रेरित मूल इब्रानी के बजाय ऐसे ही संस्करण (LXX) से उद्धृत करते थे। वास्तव में परमेश्वर आज भी हम से बाइबल के अनुवादों से बात करता है।

यीशु के हमारे सर्वोच्च विचार को किसी को दूषित नहीं करने देना चाहिए। आरम्भिक मसीही उसके महत्व को देखने में नाकाम होने के खतरे में थे और हमें भी सावधान रहना आवश्यक है कि हम अपनी आंखों में यीशु के कद को घटने के लिए संदेह या अविश्वास के घने कोहरे को न आने दें।

रॉबर्ट मिलिगन ने विस्तार से सुझाया है कि यीशु मसीह को परमेश्वर का पुत्र क्यों कहा जा सकता है: (1) उसके अलौकिक ढंग से गर्भ में आने और कुंवारी मरियम से जन्म लेने के कारण (लूका 1:35); (2) प्रेरितों 13:33 में पौलुस के अनुसार उसके मुर्दों में से जी उठने के कारण (देखें प्रकाशितवाक्य 1:5); और (3) "उसके अनन्तकाल के लिए पिता का इकलौता होने के कारण।"[14] यदि यीशु आरम्भ में पिता द्वारा रचे गए होने के अर्थ में "इकलौता" होता तो परमेश्वर उसके द्वारा सब वस्तुओं की रचना नहीं कर सकता था (इब्रानियों 1:2; यूहन्ना 1:1–3)।

मिलिगन के अनुसार मसीह अपने देहधारी होने के समय पुत्र बना। परन्तु वह अपने देहधारी होने से पहले "लोगोस" (यूहन्ना 1:1, 2) था और उस समय से पहले पिता के साथ उसका अस्तित्व था। हम "परमेश्वर का पुत्र" वाक्यांश उसके लिए वैसे ही लगा सकते हैं, जैसे अपने अनादि स्वभाव में वह था, बिल्कुल वैसे ही जब हमें यह पता होता है कि वह अब्राहम के साथ था और बाद के एक समय तक अब्राहम के साथ नहीं था। "अब्राहम कसदियों के ऊर से चला गया।" "परमेश्वर का पुत्र" मसीह के ईश्वरीय स्वभाव के लिए उसके पहले शारीरिक रूप के साथ-साथ अब भी लागू हो सकता है। मी 4:3, 6 में शैतान ने उससे बात करते हुए स्पष्ट संदेहवाद के साथ अभिव्यक्ति का इस्तेमाल किया; मी 14:33 में प्रेरितों ने सजदे में मसीह को "परमेश्वर का पुत्र" कहा। रोमियों 1:4 में पौलुस उसकी महिमा में इसी पद का इस्तेमाल करता हुआ लगता है। इब्रानियों की पुस्तक समझती है कि "परमेश्वर का पुत्र" होने का अर्थ परमेश्वर

के साथ होना है। जिससे इसका अर्थ पिता की महिमा में पूर्ण एकता है। ''परमेश्वर का पुत्र'' नाम यीशु के पूरे स्वभाव के लिए था।

यीशु के यह कहने पर कि परमेश्वर उसका पिता है, यहूदियों ने दावा किया कि वह अपने आपको परमेश्वर होना बता रहा है (यूहन्ना 10:33)। यदि यह दावा गलत होता तो वह सचमुच में मृत्यु के योग्य था। यह कहना कि ''परमेश्वर का पुत्र'' का अर्थ ''परमेश्वर के साथ एक'' है, इस बात का कि पिता के परमेश्वर होने में पूर्ण एकता का सुझाव देता है। वह ''पुत्र'' है इस कारण वह ''सब का प्रभु है'' (प्रेरितों 10:36)। साइमन जे. किस्टमेकर ने टिप्पणी की है कि आयत 2 में वाक्यांश का मूल अनुवाद चाहे ''एक पुत्र'' के द्वारा है, ''परन्तु 'शब्द के पूर्ण अर्थ में संज्ञा का इस्तेमाल हुआ है और यह व्यक्तिवाचक नाम के बराबर है।''[15]

इब्रानियों के नाम पत्री की पहली तीन आयतें पूरी पुस्तक का विषयवस्तु तय कर देती हैं। परमेश्वर के प्रकाशन का ढंग, समय और घटकों का उल्लेख किया गया है।[16] आयतें 1 और 2 विषय वस्तु को स्पष्ट करती हैं, जबकि आयतें 2 और 3 मसीह के ईश्वरीय गुणों की व्याख्या करती हैं।

पुत्र की प्रकृति और महिमा (1:2, 3)

[2]... जिसे उसने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उसने सारी सृष्टि की रचना की है। [3]वह उसकी महिमा का प्रकाश, और उसके तत्व की छाप है, और सब वस्तुओं को अपनी सामर्थ्य के वचन से संभालता है। वह पापों को धोकर ऊंचे स्थानों पर महामहिमन के दाहिने जा बैठा।

इस संक्षिप्त वचन में सात अद्‌भुत बातें मसीह की प्रकृति और महिमा को संक्षेप में बताती हैं। इनकी समीक्षा करते हुए ध्यान देते हैं कि उसके साथ हमारे सम्बन्ध में प्रत्येक ईश्वरीय गुण का क्या अर्थ है।

आयत 2. यीशु को सारी वस्तुओं का वारिस घोषित किया गया है। इस वाक्यांश में भजन संहिता 2:8 की गूंज सुनाई दे सकती है, जो कहती है कि सब वस्तुओं की प्रतिज्ञा उसी के लिए की गई थी जिसमें ''जातियां'' भी हैं। मसीह अब हर चीज़ के ऊपर सर्वोच्च अधिकारी है (कुलुस्सियों 1:18; इफिसियों 1:22, 23)। इब्रानियों 2:5–9 में यह समझाते हुए कि ''अन्तिम आदम यीशु के कदमों में सब चीज़ें रख दी गई हैं'' इस सच्चाई को खोलकर समझाया है। उसने ''सब कुछ'' (*pantōn, pas* शब्द से) का उल्लेख किया जो कि उसकी विस्तृत अभिव्यक्ति है जिसका अर्थ ''मनुष्यजाति'' हो सकता है या उसमें पृथ्वी पर और स्वर्ग पर की हर चीज़ हो सकती है। इसमें संदेह नहीं हो सकता कि ''सब कुछ'' में युगों के छुड़ाए हुए लोग शामिल हैं। इसलिए हम मसीह के हैं, मसीह परमेश्वर का है और हर चीज़ जो मसीह की है वह हमारी है (1 कुरिन्थियों 3:21–23)। वह ''वारिस'' है क्योंकि परमेश्वर का केवल एक ''पुत्र'' है। हमारे लिए मसीह से अलग होकर न तो पुत्र होना और न वारिस होना सम्भव है। सचमुच में वह उन असंख्य भण्डारों के खुले द्वार के रूप में खड़ा है, जो परमेश्वर ने छुटकारा पाए हुओं के लिए

उपलब्ध करवाए हैं। कोई भी ऐसा नहीं है जो महिमामय सच्चाई पर ध्यान करके आश्चर्य और आनन्द से अभिभूत न हो जाए।

हम पक्का नहीं कह सकते कि यीशु ने अपनी वर्तमान स्थिति को कब सम्भाला, परन्तु निश्चय ही यह उसके द्वारा "सारा अधिकार" उसे दे दिए जाने की घोषणा के समय हो चुका था (मत्ती 28:18)। फिलिप्पियों 2:5-9 में पौलुस ने घोषणा की कि मसीह का ऊंचा किया जाना उसकी मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने के परिणामस्वरूप हुआ। इन आयतों में की गई बातें चाहे हमारी समझ से बाहर की हैं पर हमें परमेश्वर के पुत्र के महान किए जाने की सच्चाई को ध्यान में रखना आवश्यक है।

लेखक ने कहा, [मसीह] **के द्वारा उसने सारी सृष्टि की रचना की है।** "सृष्टि" (*aiōnas*) के लिए शब्द चाहे बहुवचन है, परन्तु इसका अनुवाद "संसार" या "जगत" हो सकता है, जैसे NIV और मौखिक में इसका अनुवाद हुआ है।

मसीह ने सृष्टि में योगदान दिया और कोई भी ऐसी चीज़ नहीं बनाई गई, जो बिना उसके बनाई गई हो (यूहन्ना 1:1-3)। सिकन्द्री याजक अरियुस (ईस्वी लगभग 250-लगभग 336) का दावा था कि यीशु सृजा गया था। उसका खण्डन करते हुए यूनानी पुरखा अथनसियुस (ईस्वी लगभग 293-लगभग 373) ने यूहन्ना के पहले अध्याय में से उत्तर दिया: यीशु सब वस्तुओं की सृष्टि में लगा हुआ था। इस कारण वह सृजी हुई वस्तु नहीं हो सकता! कोई जो आज यह दावा करता है कि यीशु सृजा गया महादूत था, उसका उसी तरह से खण्डन किया जाएगा। चाहे कई लोग इस पर संदेह करते हैं पर परमेश्वरत्व में यीशु की उपस्थिति उत्पत्ति 1:1, 26 में परमेश्वर (*ʾᵉlohim*) के लिए बहुवचन संज्ञा में संकेत हो सकती है।

यदि हम सृष्टि में आश्चर्यजनक रूप से प्रभावशाली दिखाई गई शक्ति की कल्पना कर सकें तो हम किसी भी अर्थ में परमेश्वर को सीमित नहीं कर पाएंगे। हर अविश्वासी बिल्कुल यही करता है क्योंकि वह उस परमेश्वर को जो इतना महान है कि उसने फैलाव की विशालता को जो कुछ इसमें है उसके साथ रचा है, समझ नहीं सकता है। विश्वासी को यह स्वीकार करने में कोई समस्या नहीं होनी चाहिए कि यीशु ने सब कुछ रचा है। उसे ब्लैक होल, नई-नई बातों और पहले अज्ञात तारों या अन्तरिक्ष में गृहों की खोजों से भी परेशान नहीं होना चाहिए। नई-नई जानकारियों से हमें और भी आश्चर्य और धन्यवाद के साथ आराधना करनी चाहिए क्योंकि हमें परमेश्वर की शक्ति, सामर्थ और समझ का और पता चला है।

यदि नई-नई खोजों से हमारा विश्वास डोलता है तो यह केवल इस कारण हो सकता है क्योंकि हमें अपने परमेश्वर की महानता और महिमा की सीमित समझ है। आश्चर्यजनक रूप से प्रभावशाली शक्ति और योग्यता वाले सृष्टिकर्त्ता का प्रमाण हमारे अपने शरीर के हर सैल में मिलता है। वह परमेश्वर जो अपने हर बच्चे की इतनी परवाह करता है कि वह हमारे सिर के बालों की गिनती तक जानता है, वह परमेश्वर है जो हमारे छोटे से छोटे मामलों में भी हमारा ध्यान रख सकता है (लूका 12:6, 7)।

एफ. एफ. ब्रूस यह कहने में सही हो सकता है कि "उसी के द्वारा उसने सारी सृष्टि की रचना की है" वाक्यांश मसीही भजन या आरम्भिक कलीसिया के विश्वास का अंगीकार हो सकता है (देखें यूहन्ना 1:3; कुलुस्सियों 1:16)।[17] आयतें 1 से 3 की भाषा मसीह की महिमा

करने में इतनी बुलन्द है कि ऐसा लगता है कि यह किसी आरम्भिक मसीही भजन के गाए जाने के साथ गूंजती है।

आयत 3. पुत्र को **उसकी महिमा का प्रकाश** बताया गया है, यहां हम मसीह की महानता इस बात में देखते हैं कि उसमें पिता की महिमा झलकती है। ''प्रकाश'' (*apaugasma*) का अर्थ ''चमक'' या जो ''परमेश्वर की महिमा को दर्शाता है'' (RSV) हो सकता है। द जरूसलेम बाइबल में ''परमेश्वर की महिमा का चमकदार प्रकाश और उसके स्वभाव की पूरी नकल'' है। परन्तु यह सुझाव देना कि उसमें परमेश्वर की महिमा की झलक वैसे ही जैसे चांद सूर्य के प्रकाश से चमकता है, गलत होगा। ''सीधी चमक'' बेहतर विवरण है।

''उसकी महिमा का प्रकाश'' वाक्यांश ''अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप'' (कुलुस्सियों 1:15) और ''परमेश्वर के तुल्य'' (फिलिप्पियों 2:6) में समानताएं ढूंढ़ लेता है। परमेश्वर की महिमा पुराने नियम में चुंधियाने वाली रोशनी थी (निर्गमन 34:29–35)। यह चमक रूपांतर के समय यीशु के चेहरे का स्मरण दिलाती है (मत्ती 17:2; मरकुस 9:2, 3; लूका 9:29)। उस पल में वह *shekinah* (मूल में, ''बसना'') के साथ अर्थात पुराने नियम में दिखाई गई परमेश्वर की उपस्थिति के साथ चमका था। उस महिमा के दर्शन से प्रेरितों को यकीन हो जाना चाहिए था कि अब उन्हें मूसा की नहीं सुननी है, बल्कि अपने अन्तिम अधिकारी के रूप में यीशु को ग्रहण करना है। परमेश्वर ने उस सच्चाई को ज़ोरदार बनाने के लिए अपनी ओर से ''उसकी सुनो!'' जोड़ दिया।

यहां वर्णित महिमा इस बात का प्रगटावा है कि परमेश्वरत्व की परिपूर्णता मसीह में वास करती है (कुलुस्सियों 2:9)। लेखक का एक स्पष्ट इरादा यह दिखाना था कि यीशु का अपना स्वभाव ही परमेश्वर वाला है।

उसके परमेश्वर होने के प्रमाण के लिए चौथी सदी में बहस आवश्यक थी। क्योंकि मसीह की प्रकृति को न समझना सुसमाचार की पूरी प्रकृति को नष्ट कर देना है। वास्तव में हमारे पूरे जीवन गलत हो जाएंगे यदि हमारे पास मसीह की गलत अवधारणा हो और हम उसे केवल परमेश्वर के ''प्रदर्शन'' के रूप में ही देखें और परमेश्वर के सार के रूप में नहीं। यह बात यूहन्ना की घोषणा से मेल खाती है कि ''वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था'' (यूहन्ना 1:1)।

यह दिखाने के बाद कि परमेश्वर हमारे साथ अपनी इच्छा की बात कैसे करता है, लेखक ने परमेश्वर की महिमा पर ज़ोर दिया जो मसीह में दिखाई गई थी। पहली सदी में यह सच्चाई इतनी महत्वपूर्ण क्यों थी? यहूदी लोग मन्दिर की सुन्दरता में शान समझते थे और इसे अपने साथ परमेश्वर की उपस्थिति के प्रदर्शन के रूप में देखते थे। मसीही यहूदियों को यह समझना आवश्यक था कि मसीह की महिमा उस मन्दिर से कहीं बढ़कर थी, जो जल्द ही (70ईस्वी में) सदा के लिए नष्ट हो जाने वाला था। मसीह **उसके तत्व की छाप है**। जिस प्रकार से सिक्के पर छपी मूर्त डाई के आकार से मेल खाती है[18] जिससे यह बना होता है, वैसे ही परमेश्वर का पुत्र ''अपनी ही प्रकृति की मोहर लगाए हुए है'' (RSV)। ''छाप'' (*charaktēr*) का इस्तेमाल नये नियम में केवल यही हुआ है और इसका अर्थ बिल्कुल उसी किस्म का है। इसका अर्थ वह नहीं है, जो अंग्रेज़ी भाषा में ''चरित्र'' का है। यीशु को और कहीं परमेश्वर का *eikōn*

(''प्रतिरूप'') कहा गया है (2 कुरिन्थियों 4:4; कुलुस्सियों 1:15)। 1 कुरिन्थियों 11:7 में मनुष्यों को ''परमेश्वर का स्वरूप [*eikōn*]...'' कहा गया है। *Charaktēr* बिल्कुल नकल को कहा जाता है, जबकि *eikōn* केवल प्रतिनिधिक गुण होने के लिए है। यीशु में परमेश्वर, अपने पिता के सारे गुण हैं। मौकसुएसटिया के प्राचीन लेखक थियोडोर (ईस्वी 350–428) ने कहा है कि ''वचन परमेश्वर था'' (यूहन्ना 1:1) ''वह ... अपने स्वभाव की हूबहू नकल है'' के समान है।[19]

इसका अर्थ यह है कि इस भाषा के अनुसार यीशु एक प्रतिलिपि है, परन्तु इसका अर्थ वास्तविक चीज़ से कुछ अलग नहीं है। क्रिसोस्टोम ने समझाया कि इस शब्द का इस्तेमाल केवल इसलिए किया जा सका क्योंकि ''यथार्थता के साथ आश्चर्यजनक ढंग से प्रभावशाली विवरण से मानवीय भाषा अपर्याप्त है।''[20] हमें और कहीं स्पष्ट वचनों के उल्लंघन में गलत निष्कर्ष निकालने के लिए गलत शब्दों को अनुमति नहीं देनी चाहिए! पिता के साथ अपने निकट सम्बन्ध के कारण मसीह किसी भी अन्य प्राणी या स्वर्गदूत से श्रेष्ठ है। पिता से अलग एक और व्यक्ति होने के बावजूद वह ईश्वरीय है और परमेश्वर की तरह ही है (यूहन्ना 10:30; 17:20, 21)।[21] प्राचीन हों या आधुनिक जो सम्प्रदाय यीशु को केवल नाशवान मनुष्य या सबसे बड़ा स्वर्गदूत होने का दावा करते हैं वे पूरी तरह से इब्रानियों की पुस्तक के अर्थ को नहीं समझते हैं। यीशु में पिता का ही स्वभाव है। यह आश्चर्यजनक रूप से प्रभावशाली है, परन्तु यह वह सच्चाई है जिसकी घोषणा पवित्र शास्त्र में सपष्टता से की गई है! मसीह के परमेश्वर होने की यह सबसे बड़ी अभिव्यक्ति और सबसे गम्भीर घोषणा है। ''व्यक्ति'' या ''प्रकृति'' (*hupostasis*) व्यक्ति का अस्तित्व है या सार। यह वचन बिना किसी संदेह के इस विचार का समर्थन करता है कि यीशु की प्रकृति वैसे ही है जैसी परमेश्वर की।

फिर लेखक ने कहा कि मसीह **सब वस्तुओं को अपनी सामर्थ के वचन से सम्भालता है।** यह वही विचार है जो कुलुस्सियों 1:17 में मिलता है: ''वही सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुएं उसी में स्थिर रहती हैं।'' यह उपाय के द्वारा काम करने का एक विवरण है। जिस प्रकार से परमेश्वर के ''वचन'' (*rhēma*) के द्वारा संसार की सृष्टि की गई, वैसे ही उसके वचन अर्थात उसकी सम्भालने वाली सामर्थ के द्वारा इसे सम्भाले रखा गया है। जिस प्रकार से यह सच है कि सब वस्तुएं उसी ने सृजी हैं, कोई भी वस्तु बिना उसके बनी नहीं रह सकती।

यहां कही गई बात का अर्थ हो सकता है कि वह संसार के क्रम और भलाई को बनाए रखता है। ''सब कुछ'' में स्वर्गदूत, मनुष्य, सूर्य, चंद्रमा, तारे और सभी आ जाते हैं (देखें उत्पत्ति 1:14–19)। क्या इसका अर्थ यह है कि यीशु संसार की व्यवस्था को बनाए रखने के लिए कुछ करके या कुछ बोलकर हर रोज़ कोई आश्चर्यकर्म करता है? नहीं, क्योंकि उसने एक भौतिक प्रणाली ठहरा दी है जो क्रमबद्ध ढंग से काम करती रहती है। सूर्य हर सुबह उगता है क्योंकि यीशु ने आदि के बाद से उस प्रबन्ध को बदलने के लिए कोई वचन नहीं बोला है। हम उसे परमेश्वर का सामान्य उपाय कहते हैं।

परमेश्वर के बोले गए वचन ने शून्य में से संसार की रचना की (इब्रानियों 11:3)। यीशु ही है ''जो सब चीज़ों को उनके ठहराए हुए मार्ग पर आगे ले जाता है।''[22] ग्रहों को उसकी सामर्थी, अधिकारात्मक और शक्ति के प्रभावशाली वचन के द्वारा अपने कक्षों में रखा गया है। सृष्टिकर्त्ता

के रूप में परमेश्वर की अवधारणा पुराने नियम के विश्वासी यहूदियों को अच्छी तरह से पता थीं (देखें यशायाह 40:21, 22)। हमें इन विचारों पर और टिकने और परमेश्वर की सृजनात्मक शक्ति और उपाय में पूरा विश्वास करने की आवश्यकता है।

मसीह **ने पापों को धो** दिया। NIV में कहा गया है कि उसने "पापों के लिए शुद्धिकरण दिया।" इस आसान सी अभिव्यक्ति में सुसमाचार का सार मिल जाता है। मूसा की व्यवस्था के अधीन नैतिक शुद्धता केवल बलिदान के द्वारा पाई जा सकती थी (इब्रानियों 9:22)। यीशु ने क्रूस पर बहे अपने लहू के द्वारा हमारे पापों को क्षमा करने का साधन दे दिया। इसका लाभ यह है कि हमें क्षमा मिलती रहती है (1 यूहन्ना 1:7)। "धो दिया" (*poieō* से *poiēsamenos*), अनिश्चितभूतकाल कृदंत होने के कारण दिखाता है कि यह भूतकाल में पूरा हो गया था। यह इस बात पर ज़ोर देता है कि छुटकारे का मसीह का काम पूरा हो गया है, जो कि इब्रानियों की पुस्तक में मुख्य बात है।

यीशु केवल नैतिक सुधार की शिक्षा देने या केवल नमूना देने या शहीद होने के लिए नहीं आया। वह पापों को मिटाने के लिए आया ताकि हमें अनन्त जीवन मिल सके। परन्तु बड़ी सच्चाई यहां पर यह है कि पापों के लिए शुद्धिकरण करके परमेश्वर के पुत्र ने ऐसा काम किया है जिसे कोई दूसरा नहीं कर सकता था। उसने वह किया है जिसे महायाजक नहीं कर सकता था क्योंकि याजक के काम केवल एक साल की क्षमा पाने के लिए थे। उसके विपरीत यीशु ने सदा के लिए हमारे पापों की पूर्ण क्षमा पा ली है। वह हमारे लिए विनती करने के लिए सर्वदा जीवित रहकर छुटकारे का काम करता रहता है (इब्रानियों 7:25)।

पुत्र हमारा छुड़ाने वाला है। पापों के हमारे शुद्धिकरण का काम पूरा करके, **वह** (परमेश्वर) **के दाहिने जा बैठा**। स्वर्ग में सिंहासन के दाहिनी ओर से स्थिफनुस को दिखाई देने के समय यीशु खड़ा था (प्रेरितों 7:56)! इब्रानियों की पुस्तक का ज़ोर कि यीशु अब "बैठा" है, दिखाता है कि छुटकारे का उसका काम पूरा हो चुका है इस कारण बलिदान के रूप में अपने आपको देते रहने की किसी भी शिक्षा का खण्डन करता है।

यहां दिया गया हवाला भजन संहिता 110:1 का है, जो कि इब्रानियों की पुस्तक में बार-बार दोहराया जाने वाला मुख्य वचन है (1:13; 8:1; 10:12, 13; 12:2)। इब्रानियों 10:11 मसीह के बैठने के साथ हारून के वंश के याजकों के प्रतिदिन खड़ा रहने में अन्तर करती है। यहूदी याजकों के बैठने के लिए कोई प्रबन्ध नहीं किया गया था। क्योंकि तम्बू में कोई कुर्सी नहीं थी। अपर्याप्त उद्धार को पाने के लिए यहूदी याजक लगातार काम करते थे। इसके उलट मसीह ने क्रूस पर सदा के लिए छुटकारे का अपना काम पूरा करके हमारे उद्धार को पूरा पा लिया है!

भजन संहिता 110 दाऊद के घराने के एक राजकुमार को सम्बोधित था। यह "स्पष्ट रूप में" "स्वयं दाऊद की तरह जब वह 'जाकर यहोवा के सामने बैठा' था ईश्वरीय उपस्थिति में बैठने के दाऊद के घराने की सुविधा" थी (2 शमूएल 7:18) [23] यीशु के मसीहा होने को दिखाने के लिए यह भजन आरम्भिक कलीसिया का पसंदीदा प्रमाण बन गया था। (देखें मरकुस 12:37; प्रेरितों 2:34; 1 कुरिन्थियों 15:25; इफिसियों 1:20.) इसका इस्तेमाल न केवल यह दिखाने के लिए किया जाता था कि उसका काम पूरा हो गया है और वह विश्राम कर रहा है बल्कि यह दिखाने के लिए भी किया जाता था कि वह बैठकर परमेश्वर के साथ राज कर रहा

है (प्रेरितों 2:33-36)। वह "प्रभु और उद्धारकर्त्ता" है (प्रेरितों 5:31) और अपने पिता के साथ गद्दी पर बैठा है!

मसीह, परमेश्वर का पुत्र, स्वर्गदूतों से श्रेष्ठ (1:4-14)

1:4-7

4और स्वर्गदूतों से उतना ही उत्तम ठहरा, जितना उसने उनसे बड़े पद का वारिस होकर उत्तम नाम पाया।

5क्योंकि स्वर्गदूतों में से उसने कब किसी से कहा,

"तू मेरा पुत्र है,
आज तू मुझ से उत्पन्न हुआ?"

और फिर यह,

"मैं उसका पिता हूंगा,
और वह मेरा पुत्र होगा?"

6और जब पहिलौठे को जगत में फिर लाता है, तो कहता है,

"परमेश्वर के सब स्वर्गदूत उसे दण्डवत करें।"

7और स्वर्गदूतों के विषय में यह कहता है,

"वह अपने दूतों को पवन,
और अपने सेवकों को धधकती आग बनाता है।"

आयतें 4 और 5 में लेखक ने स्वर्गदूतों के सम्बन्ध में यीशु के ऊंचा किए जाने और होने की बात की। उसके कहने का अर्थ था कि किसी को मसीहियत से वापस नहीं मुड़ना चाहिए, क्योंकि मसीह नबियों के साथ-साथ स्वर्गदूतों से भी बड़ा है। सच्चाई की तीन पंक्तियों (1) मसीह जो बना, (2) जो वह है और (3) आदर का उसका स्थान पर ज़ोर देते हुए उसने अन्तर किया।

हम पूछ सकते हैं, "स्वर्गदूतों के ऊपर मसीह की श्रेष्ठता की बहस करने की क्या आवश्यकता है?" बाद के यहूदी मत में यह माना जाता था कि वे सबसे ऊंचे जीव हैं[24] और स्वर्गीय मन्दिर में सेवा करने वाला याजक मीकाइल है।[25] यहूदियों का मानना था कि इस आत्मिक कार्य के लिए स्वर्गदूतों में सबसे बड़े की सेवा आवश्यक है।

मृत सागर के पत्रों में जिनमें मसीहा के रूप में दो व्यक्तियों को दिखाया गया है बाइबल से बाहर के लेखों में स्वर्गदूतों के विषय में उलझन लगती है। इनमें से एक राजसी व्यक्ति होना

था, जिसका राजसी शासन अपने याजकाई कार्यों के अधीन होना था। दोनों ही व्यक्ति महादूत मीकाइल के अधीन होने थे। अन्य शब्दों में शिक्षा यह थी कि स्वर्गीय जीव ने "आने वाले संसार" में राज करना था।[26]

स्वर्गदूतों ने व्यवस्था के दिए जाने में योगदान दिया था। इस कारण यहूदियों में उन्हें बड़ा मान दिया जाता था। स्वर्गीय जीवों की यह सच्चाई लेखक के तर्क पेश करने की आवश्यकता के लिए काफ़ी है।

आयत 4. यह आयत कहती है कि मसीह उसके कारण जो वह बना स्वर्गदूतों से महान है: **और स्वर्गदूतों से उतना ही उत्तम ठहरा, जितना उस ने उन से बड़े पद का वारिस होकर उत्तम नाम पाया।** "ठहरा" "बनाया गया" से बेहतर अनुवाद है क्योंकि बाद वाले अनुवाद का अर्थ यह हो सकता है कि वह "बनाया" गया था। "बनाया गया" यूहन्ना की गवाही का उलट होना था कि वह परमेश्वरत्व में दूसरा सदस्य है और उसने "सब कुछ" रचा है (यूहन्ना 1:3)। यदि "बनाया गया" अनुवाद का इस्तेमाल किया जाए तो यह केवल उसके मानवीय स्वभाव का अर्थ दे सकता है। यीशु जो कि ईश्वरीय, अनादि पुत्र है, मनुष्य बन गया।

यीशु का श्रेष्ठ "नाम" उसके आज्ञापालन और महिमा पाने के द्वारा मिला (फिलिप्पियों 2:8-11)। जो कुछ वह है और जो उसने किया उस सब के कारण उसे उसका नाम "पुत्र" है जो कि स्वर्गदूतों के वर्णन करने के लिए इस्तेमाल होने वाले किसी भी शब्द से उत्तम है।

पुत्र के पास स्वर्गदूतों से बड़ा पद, विशेषाधिकार और अधिकार है। परमेश्वर के स्वर्गदूत परमेश्वर की सृष्टि के क्षेत्र में मात्र सेवक हैं। "उत्तम" (*kreittōn*) का अर्थ "श्रेष्ठ" हो सकता है जैसा कि RSV में इसका अनुवाद हुआ है। *Tosoutos* जिसका अर्थ "इतना अधिक" और *kreittōn* जिसका अर्थ "उत्तम" है, पुत्र की स्थिति का वर्णन करते हैं। किसी चीज़ से बेहतर होने का यह विचार इब्रानियों की पुस्तक में विभिन्न रूपों में तेरह बार इस्तेमाल हुआ है (12 आयतों में: 1:4; 6:9; 7:7 ["बड़ा"], 19, 22; 8:6; 9:23; 10:34; 11:16, 35, 40; 12:24)।

कइयों को लगता होगा कि यीशु एक स्वर्गदूत ही तो है, उस अर्थ में केवल "परमेश्वर का पुत्र" है (देखें अय्यूब 1:6; 2:1; 38:7)। इसके विपरीत लेखक ने दिखाया कि यीशु स्वर्गदूतों से श्रेष्ठ है और इस सच्चाई को उस निकट सम्बन्ध के स्थान का वर्णन करते हुए दिखाया जो परमेश्वर के साथ उसका है। लेखक ने ज़ोर दिया कि उसके पाठक अपने सतावों और विश्वास की कमी से अपने ऊपर लाई गई समस्याओं से कभी निपट नहीं सकते, जब तक वे पहले यीशु की प्रकृति के स्वभाव के दृष्टिकोण को नहीं पाते हैं।

अपने देहधारी होने से पहले यीशु को लोगोस (*logos*) कहा गया। उसके लिए कम से कम यूहन्ना 1:1, 14 में यही शब्द इस्तेमाल हुआ है। एक रूपक जो शायद उससे कमज़ोर है, यह है कि यदि एक शब्द में वह सारा ज्ञान हो सके जिससे परमेश्वर को जाना जा सकता है तो इसे व्यक्त करने के लिए "लोगोस" ही है, इसलिए यीशु परमेश्वर का ही मूर्त रूप है (यूहन्ना 14:7-11)। उसके विषय में यह शिक्षा पौलुस की उस बात से पूरी तरह से मेल खाती है जो उसने उसके सम्बन्ध में इफिसियों 1:19-21 और फिलिप्पियों 2:9-11 में कही।

लेखक ने वास्तव में खामोशी का तर्क दिया ।

सार में उसने कहा, ''यह पुत्र के लिए कहा गया था, इसलिए, 'तू मेरा पुत्र है, आज तू मुझ से उत्पन्न हुआ,' और किसी स्वर्गदूत के लिए ऐसी कोई बात कभी नहीं कही गई, यह तथ्य स्वर्गदूतों के पुत्र से कम होने को साबित करता है।'' उसने संकेत दिया कि कोई इस प्रकार की मान्यताएं नहीं बना सकता: ''चाहे किसी स्वर्गदूत को 'पुत्र' नहीं कहा गया (इस विशेष अर्थ में), फिर भी आगे बढ़कर हम किसी को 'पुत्र' कह सकते हैं क्योंकि हमारे ऐसा करने के विरुद्ध कुछ नहीं कहा गया है।'' यह पत्री हमारे ऊपर यह तर्क थोपती है: ''स्वर्गदूतों के विषय में पुत्र होने की घोषणा करने के लिए कुछ नहीं कहा गया है इसलिए ऐसी कोई बात सच नहीं हो सकती।'' हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं जो उसके, जो सच है, विपरीत परिणाम निकाले।

आयत 5. इब्रानियों की पुस्तक में दी गई दूसरी सच्चाई यह दिखाने के लिए है कि यीशु स्वर्गदूतों से बड़ा उस तथ्य के कारण है जो वह है: **क्योंकि स्वर्गदूतों में से उसने कब किसी से कहा, ''तू मेरा पुत्र है, आज तू मुझ से उत्पन्न हुआ?'' और फिर यह, ''मैं उसका पिता हूंगा, और वह मेरा पुत्र होगा?''**

अध्याय 1 में पुराने नियम के पहले सात उद्धरणों में ''तू मेरा पुत्र है, आज तू मुझ से उत्पन्न हुआ'' उद्धरण भजन संहिता 2:7 से लिया गया है। यह विशेष भजन प्रकाशितवाक्य 12:5 और 19:15 में यीशु के लिए और प्रकाशितवाक्य 2:27 में उसके राज्य के शासन में सहभागी होने वालों के लिए ही लागू हो सकता है।

यहूदियों को लगा हो सकता है कि भजन संहिता 2:7 किसी विशेष स्वर्गदूत के लिए लागू होता है। उदाहरण के लिए यदि किसी रब्बी को पूछा जाए, ''परमेश्वर 'पुत्र' के रूप में किसे सम्बोधित करेगा?'' तो उसका उत्तर हो सकता है, ''स्पष्टतया, परमेश्वर किसी बलवान स्वर्गदूत से बात कर रहा है, क्योंकि स्वर्गदूतों को आम तौर पर 'परमेश्वर के पुत्र' कहा जाता है'' (देखें अय्यूब 1:6; 2:1; 38:7)। परन्तु इब्रानियों की पुस्तक इन और बाद की आयतों में यह दिखाते हुए कि मसीह पुत्र है न कि स्वर्गीय जीव, इस दृष्टिकोण का खण्डन करती है। यीशु को दो अवसरों पर परमेश्वर द्वारा अपने पुत्र के रूप में माना गया (मत्ती 3:17; 17:5)। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने कहा कि कोई भी यह दावा नहीं कर सकता है कि परमेश्वर ने किसी स्वर्गदूत को ''पुत्र'' कहा हो।

भजन संहिता 2:7 की भविष्यद्वाणी मसीह के देहधारी होने की बात नहीं करती, बल्कि उसके पुनरुत्थान की बात करती है। मसीह का कब्र से स्वर्ग में सिंहासन पर ऊंचा किया जाना कुछ ऐसा है, जो पवित्र शास्त्र में उसके देहधारी होने से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। नये नियम में सबसे अधिक ध्यान मरियम के द्वारा यीशु के जन्म पर नहीं, बल्कि मुर्दों में से उसके जी उठने पर है। वास्तव में पुनरुत्थान से ही यीशु के सामर्थ के साथ परमेश्वर का पुत्र होने की घोषणा हुई (रोमियों 1:4)।

''मैं उसका पिता हूंगा'' वाक्यांश 2 शमूएल 7:14 से लिया गया है। परमेश्वर और यीशु का पिता/पुत्र का सम्बन्ध स्वर्गदूतों के साथ सृष्टिकर्त्ता के सम्बन्ध से कहीं निकट है।

2 शमूएल के शब्द मूलतया दाऊद या सुलैमान के लिए कहे गए लगते हैं, परन्तु यह दिखाते हुए कि परमेश्वर मसीह की बात भी कर रहा था इब्रानियों की पुस्तक में ''दोहरे हवाले'' का संकेत दिया गया है। भविष्यद्वाणी के वर्णन का शायद एक बेहतर ढंग यह है कि ऐतिहासिक रूप

में ये शब्द दाऊद या दाऊद के पुत्र सुलैमान में आंशिक रूप में पूरे हुए हो सकते हैं। जिसने पहले मन्दिर के भवन के बनाने को पूरा किया। परन्तु ''पूरी तरह से पूरा होना तब तक नहीं हुआ जब तक दाऊद के महान पुत्र का समय नहीं आया।''[27]

पुराने नियम में भविष्यद्वाणी की इस किस्म के कई मामले हैं, जो सांकेतिक भी हैं और स्पष्ट भविष्यद्वाणी भी। ''मैंने अपने पुत्र को मिस्र से बुलाया'' का सांकेतिक रूप में पूरा होना (मत्ती 2:15, होशे 11:1 से) दिखाता है कि एक लोग के रूप में इस्राएल कई बार मसीह और उसके कामों को दिखा सकता है। इस प्रकार पुराने नियम में इस्राएल के लोग कई प्रकार से मसीह का प्रतीक थे। इसी प्रकार से जंगल में सांप से चंगाई मिली, परन्तु वह भी मसीह का प्रतीक था क्योंकि उसे क्रूस के ऊपर ऊंचा उठाया गया (यूहन्ना 3:14)। जंगल में इस्राएल के लिए पानी और भोजन का उपाय यीशु के प्रतीक ही थे (1 कुरिन्थियों 10:1-4)। फसह का हर मेमना जिसे काटा जाता था यीशु की ओर संकेत करता था (1 कुरिन्थियों 5:7)। यशायाह 7:14 (''एक कुंवारी गर्भवती होगी'') का यशायाह के समय के लिए विशेष अर्थ था, परन्तु इसका सम्पूर्ण रूप से पूरा होना यीशु में था जैसा कि मी 1:21-23, 24 में संकेत मिलता है।

2 शमूएल 7:14-17 का भाग दाऊद या सुलैमान पर लागू होता था परन्तु यह ''बड़े सुलैमान'' के लिए भी था, जो यीशु है। ''यदि वह अधर्म करे, तो मैं उसे मनुष्यों के योग्य दण्ड दे, आदमियों के योग्य मार से ताड़ना दूंगा'' वाक्यांश को कदाचित मसीह के लिए लागू नहीं किया जा सकता, क्योंकि वह निष्पाप था। दाऊद मसीह का एक टाइप था, परन्तु जो कुछ उसने किया उस सब में नहीं; सो यह इस भविष्यद्वाणी के साथ है। ''दाऊद'' की बात करते हुए यहेजकेल 34:23 दाऊद के उत्तराधिकारी की बात करता था न कि मृत राजा के व्यक्तिगत उत्तराधिकारी की। जिसकी बात की गई है वह मसीहा अर्थात ख्रिस्तुस ही होना था। इब्रानियों की पुस्तक का लेखक कह रहा था कि यह प्रतिज्ञा मसीह के आने में इसके पूरा होने में मिलती है, जो परमेश्वर का पुत्र और दाऊद की संतान दोनों हैं, है। मृत सागर के पत्रों में मिली एक पुस्तक *द मिद्रास*[28] के एक नोट्स से 2 शमूएल 7:12-17 की व्याख्या स्पष्ट रूप में मसीहा से जुड़े वचन के रूप में होती है, जो ''दाऊद की शाखा'' से जुड़ा है जिसमें समय के अन्त में खड़े होना था।

लेखक ने प्रमाण के वचनों को उनके मूल संदर्भीय अर्थ का सम्मान किए बिना संयोग से नहीं देखा। सी. एच. डॉड ने दिखाया है कि ''व्यावहारिक रूप में पुराने नियम से नये नियम के सभी उद्धरण, थोड़ा-थोड़ा करके अलग होने के बजाय पूर्ण के भागों जैसे अधिक हैं-के लेखकों ने अलग-अलग संदर्भों से नहीं बल्कि पूरे संदर्भों से लिया जिसे वे अपने उद्धरणों के लिए पर्याप्त स्रोत के रूप में पहचानते थे।''[29] आर. वी. जी. टासकर इससे सहमत था जब उसने कहा कि इब्रानियों के लेखक द्वारा इस्तेमाल किए गए ढंग के आलोचक कुछ लोगों ने पवित्र शास्त्र का उद्धरण देने में अनुचित रीति से आक्रमण किया है:

> बाइबल के विद्वान, उस सटीक ऐतिहासिक परिस्थिति की खोज में जिस ने नबी को बोलने के लिए उकसाया, इस सच्चाई को भूल गए हैं कि ''ईश्वरीय प्रकाशन पूरी तरह से परिस्थितियों से नहीं चलता जिसमें इसे पहले दिया गया हो, न ही इसका महत्व ऐतिहासिक परिस्थिति से कम होता है जिस में मनुष्य ने इसे पहले बोल दिया हो, बल्कि

इसका कहीं अधिक व्यापक हवाला होता है।''[30]

यह अवधारणा पुराने और नये नियमों के पूरे सम्बन्ध को प्रभावित करती है:

> इब्रानियों की पुस्तक पुराने और नये नियमों के बीच सम्बन्ध को परिभाषित करने के पहले और सबसे सफ़ल प्रयासों में से एक है, और ... पुस्तक के महत्व का अधिकतर भाग व्याख्या के उस ढंग में मिलता है जिसे पहले उपेक्षा से नकार दिया गया था।[31]

वचनों की डोरी आरम्भिक कलीसिया में विशेष बात थी। लेखक ने एक वचन का परिचय दिया, यहूदी विचार का खण्डन किया और फिर दिखाया कि यह मसीह पर कैसे लागू होता है। इसके उदाहरण प्रेरितों 2:25–28, 33–36; 13:34–37 में दिखाई देते हैं। इसलिए पुराने नियम में से अपने सात उद्धरणों के साथ इब्रानियों 1:5–13 पवित्र शास्त्र को लागू करने का सही ढंग दिखाता है।

आयत 6. भूमिका **कहता है** का स्पष्ट अर्थ है कि परमेश्वर इस सच्चाई की घोषणा करता है! वह वचन के द्वारा स्वयं बात करता है। इस वाक्यांश से हमें पवित्र शास्त्र की ईश्वरीय प्रेरणा के लेखक के विचार की गहरी समझ मिलती है। लेखक ने इस वचन को इसके ईश्वरीय अधिकार को समझते हुए दोहराया।

इस आयत के उद्धरण को चाहे भजन संहिता 97:7 से लिया गया माना जाता है पर यह LXX वाली व्यवस्थाविवरण 32:43 की शब्दावली से अधिक मेल खाता है। इसका यह रूप मृत सागर के पत्रों में से एक में भी मिलता है।[32] व्यवस्थाविवरण 32:43 को रोमियों 15:10 में भी दोहराया गया है, जहां पौलुस ने इसे बिल्कुल वैसे ही भूमिका ''कहा है'' के साथ दिया, जो यहां इब्रानियों में भी मिलता है।[33] क्या यह पौलुस के लेखक होने की ओर एक और संकेत हो सकता है या यह आम इस्तेमाल वाली अभिव्यक्ति था?

कुलुस्सियों 1:15, 18 में यीशु को **पहलौठा** (*prōtotokos*) कहा गया है। इन आयतों में ''पहलौठे'' का अर्थ ''मरे हुओं में से जी उठने वालों में से पहलौठा'' है और यहां भी इसका यही अर्थ हो सकता है। लाज़र पहले जी उठा था परन्तु निश्चय ही एक बार फिर वह मृत्यु के अधीन हो गया था (यूहन्ना 11) जैसा कि प्रभु के पुनरुत्थान के बाद जी उठकर यरूशलेम में आने वाले और लोग (मत्ती 27:52, 53)। यीशु मृत्य के ऊपर अपनी श्रेष्ठ शक्ति को दिखाते हुए, इस पर विजय पाकर जी उठा और ''उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात शैतान को'' जीत लिया (2:14)।

परन्तु इस पदनाम में इससे कहीं अधिक बात लगती है। एफ. एफ. ब्रूस ने कहा है कि उसे 'पहलौठा' कहा जाता है क्योंकि वह सारी सृष्टि से पहले था और क्योंकि सारी सृष्टि उसकी मीरास है।[34] एक और अन्तर यह है कि स्वर्गदूतों की सृष्टि की गई थी, परन्तु पहलौठा ''इकलौता'' था।[35] भजन संहिता 2 का मसीहा से जुड़ा अर्थ प्रेरितों 4:25, 26 में स्पष्ट है जहां भजन की पहली दो आयतों को उद्धृत करके उन्हें यीशु, ''मसीह,'' अर्थात परमेश्वर के अभिषिक्त पर लागू किया गया है।

''पहलौठे'' का ''पवित्र'' या ''प्रभु के लिए पवित्र'' ''किए गए'' के विशेष अर्थ हैं

क्योंकि इसका इस्तेमाल परमेश्वर के लोगों के लिए किया जाता था जो ''पहलौठा'' होते थे (निर्गमन 13:2; 22:29; गिनती 3:12, 13)। दाऊद ''पहलौठा'' था चाहे वह पहले जन्मा नहीं था (भजन संहिता 89:27)। यह शीर्षक जन्म के क्रम से बढ़कर पद और सम्मान का है।[36] ''पहलौठा'' प्राथमिकता के लिए या श्रेष्ठता के लिए हो सकता है; स्पष्टतया यहां यह श्रेष्ठता के लिए है।[37] यह वाक्यांश देहधारी होने की ओर पीछे को चला जाता है और उस आराधना की बात करता है जो संसार में उसके आने पर स्वर्गदूतों ने उसकी की थी (लूका 2:13–15); परन्तु वह आराधना सर्वोच्च स्थानों में परमेश्वर को महिमा दे रही थी।

इस आयत के पहले भाग का अर्थ जो भी हो, महत्वपूर्ण बात यह है कि **स्वर्गदूत** मसीह से इतने कम हैं कि उन्हें **उसे दण्डवत** करने की आज्ञा दी गई। केवल ईश्वरीय जीव ही उचित रूप में आराधना को स्वीकार कर सकते हैं; यहां तक कि स्वर्गदूतों ने भी अपनी आराधना करने से मनुष्यों को रोका (देखें प्रकाशितवाक्य 22:8, 9)। भजन संहिता 97:7 में ''देवताओं'' शब्द स्वर्गदूतों के लिए इस्तेमाल हुआ है परन्तु एक भी स्वर्गदूत के लिए कभी यह नहीं कहा गया कि वह ''पुत्र'' था।

इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने यीशु और स्वर्गदूतों के बीच अन्तर किया। इब्रानियों 1:4–6 में पहले ही दिखा दिया है कि यीशु जो वह बना, जो वह है और जो पिता के साथ उसका सम्बन्ध है, उसके कारण उनसे श्रेष्ठ है। अगली आयतों 1:7–14 अन्तर में और भी महत्वपूर्ण भागों को जोड़ देती हैं।

आयत 7. भजन संहिता 104:4 से शब्द लेते हुए लेखक ने दावा किया कि **स्वर्गदूत सेवक** है, जबकि यीशु परमेश्वर का इकलौता पुत्र है। स्वर्गदूत केवल सृजे गए जीव हैं और भटक सकते हैं और उन्हें दण्ड दिया जा सकता है (2 पतरस 2:4)। परमेश्वर ने स्वर्गदूतों को ''सेवकों'' के रूप में या **धधकती आग** के रूप में सेवा करने के लिए भेजकर कई तरीकों से इस्तेमाल किया है (और इस्तेमाल करता है)।

हिन्दी सहित NASB और NIV में कहा गया है कि परमेश्वर अपने स्वर्गदूतों को पवन बनाता है जबकि KJV और NKJV में आत्माएं शब्द इस्तेमाल हुआ है। नये नियम में *pneuma* शब्द का इस्तेमाल 375 से अधिक बार हुआ है। अधिकतर इस्तेमालों में इसे ''आत्मा'' (पवित्र आत्मा, परमेश्वर का आत्मा, या मनुष्य की आत्मा कहते हुए) दिया गया है।

आयत 7 में *pneuma* का अनुवाद ''पवन'' कुछ कारणों से विश्वसनीय लगता है। सबसे पहले विचार करें कि परमेश्वर अपनी इच्छा को पूरा करने के लिए स्वर्गदूतों का इस्तेमाल कैसे करता है। वे पवन की तरह बलपूर्वक जाने और बिजली के चमकने की तरह विनाशपूर्ण ढंग से आगे बढ़ते हुए सामर्थी ढंगों से उसकी सेवा करते हैं। इसके अलावा ''पवन'' शब्द में यह सुझाव हो सकता है कि परमेश्वर उन लोगों का विनाश करने के लिए जब वह ऐसा करना चाहता है प्राकृति के तत्वों का इस्तेमाल करता है। *Pneuma* शब्द में पाई जाने वाली सम्भावनाएं हमें चकित कर देती हैं कि क्या लेखक स्वर्गदूतों के काम को उनके वर्णन के लिए इस शब्द का इस्तेमाल करके और रहस्यपूर्ण बनाने का प्रयास कर रहा था।

इस आयत में शब्द का अनुवाद ''आत्माएं'' करने के पक्ष में हम निम्न तर्क दे सकते हैं:

1. संदर्भ इसका समर्थन करता है। लेखक का उद्देश्य यह दिखाना था कि मसीह स्वर्गदूतों

से श्रेष्ठ है और यह तथ्य ज़ोरदार ढंग से यह तर्क देता है कि इस शब्द का अनुवाद ''आत्माएं'' होना चाहिए। स्वर्गदूत स्पष्ट रूप में सेवा करने वाली ''आत्माएं'' थीं, जिन्हें परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए भेजा गया था। वे केवल ''पवन'' नहीं थीं जैसा कि 1:14 स्पष्ट कर देता है।

2. अनुकूलता इसकी मांग करती है। 1:7 में इस शब्द का अर्थ 1:14 वाले शब्द से अलग क्यों होना चाहिए?

3. कालांतर में परमेश्वर के काम करने का इतिहास इसका सुझाव देता है। स्वर्गदूतों की सेवा को नये नियम के साथ-साथ पुराने नियम में भी आम तौर पर देखा जाता है। पुराने नियम के समयों में परमेश्वर ने उनके द्वारा सदोम और अमोरा का विनाश किया था (यूहन्ना 19:1-26)। मिस्र के पहलौठों को मृत्यु देने में (निर्गमन 12:23) निश्चय ही परमेश्वर एक स्वर्गदूत का इस्तेमाल कर रहा था न कि व्यक्तिगत रूप में काम कर रहा था। स्वर्गदूतों ने व्यवस्था देने में सेवा की (प्रेरितों 7:53; इब्रानियों 2:2)। दाऊद के लोगों की गिनती के लिए इस्राएल को दण्ड भी उन्हीं के द्वारा दिया गया था (2 शमूएल 24:15-17)। परमेश्वर ने सन्हेरीब की सेना को हराने के लिए अपने स्वर्गदूत का इस्तेमाल किया (2 राजाओं 19:35)। नये नियम में हम परमेश्वर को मसीह के जन्म की घोषणा करने, पुनरुत्थान की घोषणा करने और आरम्भिक कलीसिया के जीवन में अन्य बातों को पूरा करने के लिए स्वर्गदूतों का इस्तेमाल करते हुए देखते हैं।

प्रश्न के दोनों पक्षों पर विचार करने के बाद हमें पता चलता है कि दमदार प्रमाण *pneuma* का अनुवाद ''आत्माएं'' करने के पक्ष में है। परन्तु यदि इसका अनुवाद ''पवन'' भी किया जाए तो ऐसा अनुवाद लेखक की पुष्टि के मूल अर्थ को नहीं बदलता है। वह स्पष्ट रूप में यह बता रहा था कि किस प्रकार से परमेश्वर ने अपने स्वर्गदूतों का इस्तेमाल किया और उस इस्तेमाल की तुलना मसीह की स्थिति से कर रहा था।

भजन संहिता 104 के वाक्यांश विलक्षण रूप में परमेश्वर के लिए हैं। यह भजन परमेश्वर की शान और महिमा की चर्चा करते हुए अत्यधिक प्रतीकात्मक और शायराना है। परमेश्वर को पवन के ऊपर चलते हुए, बादलों को अपना रथ बनाते हुए और रौशनी को पहने हुद दिखाया गया है। उसके इन विवरणों के बाद भजन लिखने वाले ने लिखा, ''जो पवनों को अपने दूत, धधकती आग को अपने टहलुए बनाता है।'' पुराने नियम की इस आयत में *ruach* शब्द का अनुवाद ''पवनों'' होना चाहिए, जैसा कि विभिन्न संस्करणों में हुआ है। भजन प्रकृति के संसार के पहलुओं के साथ परमेश्वर की सामर्थ को दिखाता है। ''धधकती आग'' परमेश्वर की शक्ति और सामर्थ के लिए प्रतीकात्मक शब्द है। यह प्रतीक इस बात को दिखाता है कि किस प्रकार से वह अपने शत्रुओं पर विनाश और न्याय को भेजता है। अपने मूल अर्थ में यह परमेश्वर की ''गोलाबारी'' का अर्थ देता है।

लेखक ने यह पंक्ति भजन संहिता के LXX के अनुवाद से लेकर अपने ही उद्देश्यों के लिए आयत 4 के शब्दों का इस्तेमाल किया। उसने भजन के शब्दों का इस्तेमाल किया परन्तु उनके लिए एक विशेष संदर्भ दे दिया गया। परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए लेखक के रूप में वह ऐसा कर पाया। हबक्कूक 2:4 में से उद्धृत करते हुए पौलुस ने रोमियों 1:17 में यह काम किया।

आर. सी. एच. लैंसकी का मानना था कि परमेश्वर के आत्मा में इब्रानियों के लेखक को LXX में परमेश्वर की प्रेरणा से दिए गए पुराने नियम के वचन का सही इरादा बताने के योग्य

बनाया। उसने कहा कि इब्रानियों की पुस्तक "पुराने नियम के शब्दों की गहरी समझ और अभिप्राय है। ... आत्मा ने लेखक को ... नये नियम के पाठकों के लिए लिखने की उसकी इच्छा के कारण सही व्याख्याएं करने ... में अगुआई की।"[38] परन्तु लगता नहीं है कि उसका विचार उन तथ्यों से मेल खाता हो जो यहां पर भजन बताता है।

जो कुछ लेखक ने किया उसका बेहतर विचार यह लगता है कि पवित्र आत्मा ने यीशु और स्वर्गदूतों की अपनी तुलना के लिए भजन संहिता 104:4 के शब्दों के उसके मेल का निरीक्षण किया। ऐसा करते हुए उसने लेखक को परमेश्वर के इस विवरण के यूनानी अनुवाद से उद्धरण लेने में भी अगुआई की। लेखक द्वारा इस पंक्ति को अपनी पत्री में मिला लेने पर यह पंक्ति परमेश्वर की प्रेरणा से दिया हुआ पवित्र शास्त्र बन गई।

1:8-12
[8]परन्तु पुत्र के विषय में कहता है,

"हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन युगानुयुग रहेगा:
तेरा राज्य का राजदण्ड न्याय का राजदण्ड है।
[9]तू ने धर्म से प्रेम और अधर्म से बैर रखा;
इस कारण परमेश्वर, तेरे परमेश्वर ने तेरे साथियों से
बढ़कर हर्षरूपी तेल से तुझे अभिषेक किया।"

[10]और

"यह कि, हे प्रभु, आदि में तूने पृथ्वी की नेव डाली,
और स्वर्ग तेरे हाथों की कारीगरी है;
[11]वे तो नष्ट हो जाएंगे; परन्तु तू बना रहेगा:
और वे सब वस्त्र के समान पुराने हो जाएंगे।
[12]और तू उन्हें चादर के समान लपेटेगा,
और वे वस्त्र के समान बदल जाएंगे:
पर तू वही है और तेरे वर्षों का अन्त न होगा।"

आयत 8. वचन का आरम्भ होता है, **परन्तु पुत्र के विषय में कहता है, "हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन युगानुयुग रहेगा।"** आयतें 8 और 9 में लेखक ने भजन संहिता 45 अर्थात वह भजन जो पहली सदी के यहूदी विद्वानों ने मसीहा के अर्थ वाले भजन के व्यापक रूप में जाना जाता था, की शब्दावली का इस्तेमाल किया।[39] किस्टमेकर ने कहा है, "पहली और दूसरी सदियों के मसीही लोग यह मानते थे कि यीशु मसीह ने भजन के शब्दों को पूरा किया है जो इब्रानियों 1 के संदर्भ और प्रासंगिकता से और जस्टिन मार्टिर और इरेनियुस जैसे लेखकों से स्पष्ट है, जिन्होंने कई बार भजन संहिता 45:6, 7 से उद्धृत किया।[40] अज्ञात भजनकार ने दूल्हे और फिर दुल्हन को सम्बोधित करते हुए शाही विवाह को मनाने के लिए लिखा। राजा (शायद राजकुमार या दाऊद

की पंक्ति का राजा) को परमेश्वर के चुने हुए के रूप में सम्बोधित किया गया; परन्तु अपने आदर्श अर्थ में भाषा राजा दाऊद की संतान के लिए ही होगी!

यह बात यीशु का वर्णन करती है जिसे आगे ''परमेश्वर'' कहा गया है (आयत 8)। जेम्स थॉम्पसन का कहना था, ''यह पक्का नहीं कहा जा सकता कि मूल इब्रानी में राजा को परमेश्वर कहकर सम्बोधित करने का इरादा था या नहीं।''[141] एंकर बाइबल सीरीज़ के दो लेखकों, 1972 में जॉज वैसली बुचनन और 2001 में क्रेग आर. कोस्टर का विचार इस पर अलग था। बुचनन का मानना था कि यह ''परमेश्वर के सिंहासन की अनन्तता, जिस पर पुत्र ने बैठना था'' के लिए था न कि यह कि यीशु परमेश्वर है।[142] क्रेग ने कहा कि, ''यह वचन मूल में परमेश्वर के लिए था परन्तु अब बोलने वाला परमेश्वर जो पुत्र को 'परमेश्वर' कहकर सम्बोधित करता है''; ''1:8–9 में उद्धृत भजन संकेत देता है कि परमेश्वर के अभिषिक्त को 'परमेश्वर' कहा जा सकता है। यदि यीशु अभिषिक्त अर्थात मसीह है तो यह वचन उसे 'परमेश्वर' कहने का अधिकार देता है।''[143] किस्टमेकर का मानना था कि इसका इस्तेमाल ''मसीह के परमेश्वर होने को दिखाने'' के लिए किया गया।[144] एफ. एफ. ब्रूस ने कहा कि इसका अर्थ यीशु को परमेश्वर होने देने का अर्थ है कि LXX में उचित रूप से।[145] मेरे हिसाब से इस वचन का संदर्भ स्पष्ट है कि यीशु को परमेश्वर कहा जा रहा है।

यीशु के परमेश्वर होने का यह चित्र यशायाह 9:6 में भी दिया गया है, जहां हमें एक बालक का चित्रण मिलता है जिस ने ''सर्वशक्तिमान परमेश्वर'' कहलाना था। यिर्मयाह ने भविष्यद्वाणी की कि ''धर्मी अंकुर ने उठकर राजा के रूप में शासन करना था।'' ''यहोवा हमारी धार्मिकता'' बनकर (यिर्मयाह 23:5, 6)।[146] यह बिल्कुल साफ़ हो जाता है कि यीशु, अर्थात परमेश्वर का पुत्र, ''परमेश्वर'' भी है यानी वह ईश्वरीय है और पिता की तरह ही उसी सार में से है। एक ही परमेश्वर है, जो उसी सार में तीन व्यक्तियों अर्थात व्यक्तित्वों में है।

इस आयत के सम्बोधन के लिए न्यू वर्ल्ड ट्रांसलेशन में ''परमेश्वर तेरा सिंहासन है'' इस्तेमाल किया गया है, परन्तु उस अनुवाद का बचाव नहीं किया जा सकता। सही अनुवाद है, ''हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन युगानुयुग है।'' उन विद्वानों सहित जिन्होंने NASB, KJV, ASV, RSV, और NEB का अनुवाद किया, उनमें से अधिकतर विद्वान मानते हैं कि यह ''हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन, युगानयुग रहेगा'' सम्बोधन होना चाहिए। इसके अलावा यह अनुवाद 2 शमूएल 7:16 दाऊद से कहे नातान के शब्दों से मेल खाता है। राजा के लिए इस शब्दावली की प्रासंगिकता विलक्षण नहीं थी, विशेषकर दाऊद की पंक्ति के सम्बन्ध में, क्योंकि राजा लोगों के लिए परमेश्वर का प्रतिनिधि था।

1 कुरिन्थियों 15:24 समझाता है कि मसीहा का शासन अन्तिम पुनरुत्थान के समय खत्म हो जाएगा। वास्तव में मध्यस्थ के रूप में मसीह का सिंहासन खत्म हो जाएगा । जब उद्धार पाए हुए लोगों को पिता को सौंप दिया जाएगा। परन्तु वह सदा के लिए परमेश्वर के साथ हाकिम बनकर राज करता रहेगा (लूका 1:33; 2 पतरस 1:11; दानिय्येल 7:14)। तब उसे वही राज्य दिया जाएगा । जो मध्यस्थता के काम में आने से पहले परमेश्वर के साथ उसका था।

न्याय का राजदण्ड राजा की छड़ी की ओर संकेत है जिससे उसके अधिकार का पता चलता था। छड़ी से संकेत करना आज्ञा देने का संकेत था (एस्तेर 4:11)। इस वाक्यांश का जोर

मसीह के कामों पर धर्मी होने पर है।

आयत 9. लेखक ने कहा कि "**तू ने धर्म से प्रेम रखा।**" मसीह से बढ़कर कोई भी धार्मिकता के साथ शासन नहीं कर पाया या धार्मिकता से प्रेम नहीं कर पाया। दूसरे राज्य का और कौन सा राज्य है, जिसका शासन ऐसा है। आम तौर पर बेहतरीन राजा भी मनमौजी हो जाता है यदि अधिक समय के लिए उसके हाथ में पूरी शक्ति दे दी जाए। मसीह का राज सर्वदा सच्चा और निष्पक्ष है। उसने "धर्म से प्रेम रखा और सब बातों में इसी नियम का पालन किया" (देखें 1 पतरस 2:21–23)।

इस कारण "**परमेश्वर ... ने तेरा अभिषेक किया।**" उत्सव के अवसरों पर या राजा के राज्य अभिषेक के समय अभिषेक करने से प्राचीन जगत में बड़ी खुशी होती थी। अभिषेक में तेल का इस्तेमाल किसी महत्वपूर्ण घटना या नियुक्ति पर आम लोगों के आनन्द करने को दिखाता था। राजाओं, याजकों और नबियों का अभिषेक उनके पदों की प्रतिष्ठा के चिह्न के रूप में तेल से अभिषेक किया जाता था। उदाहरण के लिए हारून (लैव्यव्यवस्था 8:12), हारून के पुत्र (गिनती 3:3) और शाऊल (1 शमूएल 10:1) के साथ ऐसा देखा जाता है।

यीशु का अभिषेक स्वर्ग में पिता के साथ उसके पास लौटने के अवसर पर था, जब उसके ऊपर आदर का अम्बार लगा दिया गया और उसे कलीसिया का सिर अर्थात स्वर्ग के राज्य का राजा बना दिया गया। नाम "ख्रिस्त" जो कि यीशु का शीर्षक था, का अर्थ है "अभिषिक्त" और "मसीहा" का यूनानी समानांतर है (देखें भजन संहिता 2:2)। स्वर्ग में पिता के साथ महिमा पाने के लिए अपनी वापसी पर जितना आदर और महिमा यीशु को दिया गया इतना किसी और को न दिया गया और न दिया जाएगा।

NKJV में **तेरे साथियों से बढ़कर** का अनुवाद "तेरे साथियों से अधिक" हुआ है। क्या इस वाक्यांश का अर्थ है कि मसीह स्वर्गदूतों के ऊपर है? स्वर्गदूत सचमुच में मसीह से कम हैं, परन्तु क्या उन्हें उसके "साथी" कहा जा सकता है (KJV)? 2:10 में "बहुत से पुत्रों" उन छुड़ाए हुए लोगों को कहा गया है जिन्हें पहलौठा पुत्र अपने "भाई" कहने से नहीं लजाता (2:11)। 3:14 में छुड़ाए हुओं को मसीहा के *metochoi* ("भागीदार") कहा गया है, जो कि वही यूनानी शब्द है जिसका अनुवाद यहां "साथी" हुआ है। परन्तु इस संदर्भ में स्वर्गदूत ही वे साथी होने चाहिए चाहे यीशु सनातन पुत्र है और वे सृजित जीव हैं।

आयतें 10–12. इन आयतों में भजन संहिता 102:25–27 से उद्धृत किया गया है। इस भजन को आम तौर पर याहवेह को सम्बोधित भजन के रूप में समझा जाता है, जिसमें मसीह से सम्बन्धित कोई स्पष्ट बात नहीं है। परन्तु इब्रानियों में यह उद्धरण स्पष्ट स्मरण दिलाता है कि पुराने नियम की घटनाएं और संस्थान आम तौर पर अपने से आगे की ओर संकेत करते हैं। यह कहने के लिए कि भजन संहिता में यीशु नासरी में पूर्णतया पूरा होना नहीं हुआ इब्रानियों की पूरी पुस्तक को नकारकर इसके अधिकार को नकारना होगा। नये नियम में उदाहरणों, रूपों, भविष्यद्वाणियों के पूरा होने, और वाक्य रचना के द्वारा नये नियम में पुराने नियम का इस्तेमाल दोनों नियमों को एक बेजोड़ पंक्ति में मिलाता है। भजन संहिता 102 जहां अपने लोगों पर अपनी रक्षा के लिए परमेश्वर की महिमा करता है, वहीं मसीह के लिए लेखक की इसकी प्रासंगिकता से पता चलता है कि भजन को मसीहा के भजन के रूप में समझना चाहिए।

पुराने नियम में जो शब्द और अवधारणाएं केवल याहवेह के लिए हैं, उन्हें नये नियम में बिना किसी संदेह या हिचक के वैसे ही यीशु के लिए लागू किया गया है। इब्रानियों 1:2, 3 पहले ही सृष्टि में मसीह की भागीदार का संकेत दे चुका है। आयतें 10 से 12 में भजन संहिता 102 के मसीह के लिए प्रासंगिकता इसी विचार को जारी रखती है।

सीमाओं के भीतर पिता के लिए जो कुछ भी कहा गया है, वही पुत्र के लिए कहा जा सकता है। परन्तु पिता की अपनी स्वयं की महिमा है, जैसे पुत्र की है (यूहन्ना 17:4, 5)। परमेश्वर ने संसार के उद्धार के लिए अपने आपको नहीं भेजा (1 यूहन्ना 4:14)। परमेश्वर ने संसार को पाप से निरुत्तर करने के लिए आत्मा को भेजा, अपने आपको नहीं (यूहन्ना 16:7, 8)। पहली सदी के मसीही पाठकों को इस भजन को मसीह के लिए लागू करने में कोई कठिनाई नहीं होती होगी।

कुछ अर्थ में परमेश्वर, मसीह और आत्मा एक ही हैं; पर फिर भी उनके अलग-अलग कार्य और उद्देश्य हैं (यूहन्ना 10:30; 14:9-17)। इसलिए ऐसा हो सकता है कि पुराने नियम के कुछ संदर्भों में पुत्र और पिता दोनों ही बहुवचन नाम "इलोहीम" में शामिल हैं। स्वर्गदूत सृष्टि के काम में केवल दर्शक थे, जबकि पुत्र इसमें पिता की शक्ति था (इब्रानियों 1:10)। पिछले उद्धरण में उसे "हे परमेश्वर" कहा गया और इसमें "हे प्रभु।"

वचन कहता है, **"और तू उन्हें चादर के समान लपेटेगा, और वे वस्त्र के समान बदल जाएंगे: पर तू वही है और तेरे वर्षों का अन्त न होगा" (आयत 12)**। मसीह पृथ्वी को ऐसे झाड़ देगा जैसे कोई कपड़े को झाड़ देता है। यह पृथ्वी सकार्फ के जैसी है, जिसे उतारकर लपेटा जा सकता है। "चादर" के लिए शब्द का इस्तेमाल मी 5:40 में भी हुआ है। मसीह के लिए संसार को लपेटना वैसे ही कठिन नहीं है, जैसे हम गले के वस्त्र या कमीज़ को लपेटते हैं। परमेश्वर इस संसार का अन्त किसी भी समय कर सकता है। तौभी यीशु बना रहता है। वह सदा तक रहेगा और वह उन्हें नहीं त्यागेगा, जो उसके साथ खड़े हैं (इब्रानियों 13:5, 6)। इब्रानियों 12:26 दिखाता है कि संसार (कॉसमोस) का एक बार और हिलाया जाना होगा; परन्तु यीशु का राज्य जिसके हम भाग हैं, इस प्रकार से हिलाया या नष्ट नहीं किया जा सकता। यह अवधारणा हमें दानिय्येल 2 में बताए गए सपने के अर्थ का ध्यान दिलाती है, जिससे भविष्यद्वाणी में दिखाया गया कि प्रभु द्वारा राज्य स्थापित किया जाएगा, जो सदा तक रहेगा (आयतें 44, 45)।

"वे बदल जाएंगे" पृथ्वी और आकाश के लिए कहा गया है (मत्ती 24:35; 2 पतरस 3:10-13)। इसके विपरीत मसीह वह है, जो अनन्तकाल तक **वही** रहेगा (इब्रानियों 13:8)।

यह वचन और 2 पतरस 3 पृथ्वी के विनाश की बात करते हैं। फसह (निर्गमन 12:11-14) और सब्त "सदा" तक रहने थे (लैव्यव्यवस्था 24:8)। परन्तु "सदा" तक (*'olam*) शब्द केवल किसी बात के समय की विशेष अवधि में होने की बात करता है। इस कारण "सदा" तक रहने या समय की उस अवधि में पूरा समय के लिए होना था।

सभोपदेशक1:4 कहता है कि "पृथ्वी सर्वदा बनी रहती है।" परन्तु सुलैमान कह रहा था कि पृथ्वी की प्रकृति *बनी रहने वाली* है; वह यह नहीं कह रहा था कि इसकी प्रकृति *अनन्त* है। सभोपदेशक के पूरे संदर्भ को ध्यान में रखकर पढ़ना आवश्यक है। आम तौर पर इसमें घोषणाएं इस प्रकार से होती हैं कि लगता है कि चीज़ें भौतिक हैं, जिसके लिए केवल तत्व का ही महत्व है जबकि जीवन के आत्मिक पहलुओं के लिए कोई लाभ नहीं है। क्या आपको लगता है कि जीवन

की हर बात व्यस्त है या ''वायु को पकड़ना है''? (उदाहरण के लिए देखें सभोपदेशक 1:14.) सभोपदेशक के लेखक ने जब तक और निकटता से नहीं देखा, तब तक प्रश्न में आत्मिक और अनन्त नहीं डाला और अपने अन्तिम निष्कर्ष तक नहीं पहुंचा, तब तक उसे ऐसा ही लगता प्रतीत होता है। (देखें सभोपदेशक 12:13, 14.)

1:13, 14

[13]और स्वर्गदूतों में से उसने किससे कब कहा,

''कि तू मेरे दाहिने बैठ,
जब तक कि मैं तेरे बैरियों को
तेरे पांवों के नीचे की पीढ़ी न कर दूं?''

[14]क्या वे सब सेवा टहल करने वाली आत्माएं नहीं; जो उद्धार पाने वालों के लिए सेवा करने को भेजी जाती हैं?

आयत 13. लेखक ने भजन संहिता 110:1 से दो चित्र बनाए:

1. उसने यीशु को [पिता के] **दाहिने बैठ** जाने के लिए कहते हुए दिखाया। ''दाहिने बैठना'' सम्मान को दर्शाता है। इन शब्दों में शाही दरबार का दृश्य है, जिसमें राजा अपने सिंहासन पर बैठा है और उसके इर्द-गिर्द उसके सेवक हैं। पूर्व में सामान्य भोजन के समय यह प्रथा थी, जहां पर रुतबे को मान दिया जाता था, क्योंकि अति सम्मानित अतिथि को ऐसी स्थिति में ''झुकना'' जिसमें बैठना शामिल हो सकता है, होता था। जिससे मेज़बान और उसका मुख्य अतिथि आपस में आसानी से बातचीत कर सकें।

स्वर्गदूतों को कभी परमेश्वर के दाहिने बैठने के लिए नहीं कहा गया। केवल यीशु को कहा गया। यीशु ने मी 22:41-46 में अपनी बात करने के लिए भजन संहिता 110:1 का इस्तेमाल किया (मरकुस 12:36; लूका 20:43 भी देखें)। यह उन भजनों में से एक है, जिन्हें नये नियमों में से आम तौर पर उद्धृत किया गया है। यीशु ने दिखाया (मत्ती 22:34-46 में) कि उसने भजन संहिता 110 के परमेश्वर की प्रेरणा से होने और दाऊद द्वारा लिखे जाने दोनों को स्वीकार किया।

इसके अलावा उद्धरण का इस्तेमाल करके उसने दिखाया कि दो ''प्रभु'' हैं, क्योंकि भजन कहता है, ''मेरे प्रभु से यहोवा की वाणी यह है'' (भजन संहिता 110:1)। इसका अर्थ यह है कि यहूदी अगुओं को मालूम था कि ''यहोवा'' (जिसे अंग्रेज़ी की बाइबलों में प्रभु कहा गया-अनुवादक) ''दाऊद के पुत्र'' (मसीहा) के लिए था। बाद के रब्बियों के इस सच्चाई को ठुकराने की बात प्रेरितों की शिक्षा की केवल प्रतिक्रियाएं थीं, जो साफ़-साफ़ दिखाती हैं कि भजन संहिता नासरी मसीह में पूरा हुआ था। पतरस ने इब्रानियों के लेखक द्वारा दिए गए तर्क का ही इस्तेमाल किया जब उसने पिन्तेकुस्त के दिन यीशु के परमेश्वर होने को साबित किया (प्रेरितों 2:34, 35)। भजन संहिता 110 में दो प्रभुओं की चर्चा आज के लोगों, जो यीशु के परमेश्वर होने को नकारते हैं, के लिए भी वैसे ही ठोकर की चट्टान है जैसे पहली सदी में उसके परमेश्वर होने का इनकार करने वालों के लिए थी।

फिर खामोशी का एक तर्क इस्तेमाल किया जाता है। लेखक ने कहा कि स्वर्गदूतों को परमेश्वर के दाहिने बैठने के लिए कहीं नहीं कहा गया, इस कारण यह नहीं माना जा सकता कि उन से कभी ऐसा करने को कहा गया हो। परमेश्वर के दाहिने बैठने का अर्थ है कि मसीह को सर्वोच्च प्रभुत्व और अधिकार की स्थिति तक ऊंचा किया गया। इस रूपक का इस्तेमाल स्पष्टतया अपने और अपने आलोचकों के बीच समान आधार के रूप में यीशु ने किया। वह और यहूदी लोग मानते थे कि भजन संहिता मसीहा के लिए लागू होता है। भविष्यद्वाणी को उसके अपने लिए लागू करना परमेश्वर की निंदा के उनके आरोप का आधार बन गया है, क्योंकि उनका मानना था कि उसका दावा झूठा है।[47]

2. भजन संहिता 110:1 से दूसरा रूपक **बैरियों के पांवों के नीचे की पीढ़ी** के रूप में होना है (देखें इब्रानियों 10:13)। यह चित्र विजयी राजा के अपना पांव हारे हुए शत्रु की गर्दन या सिर पर रखने की प्राचीन परम्परा को दिखाता है (यहोशू 10:24)।

आयत 14. लेखक ने पूछा, क्या वह सब सेवा टहल करने वाली आत्माएं नहीं ...? ''सब'' संकेत देता है कि किसी भी स्वर्गदूत को इस काम से आराम नहीं है। उन्हें ''बैठ'' कर देखने का समय नहीं मिलता! विशेषकर वे मसीह के पृथ्वी पर रहने के समय उसकी सहायता करने में लगे हुए थे। उन्होंने मरियम के पास घोषणा की कि वह मसीहा की माता बनेगी (लूका 1:26–38)। उन्होंने यीशु के जन्म पर परमेश्वर की महिमा की (लूका 2:13)। उन्होंने उसकी परीक्षा के अन्त में जब वह सम्भवतया इतना कमज़ोर था कि वह अपनी सहायता नहीं कर सकता था, उसकी सेवा की (मत्ती 4:11)। एक स्वर्गदूत गतसमनी बाग में उसे सामर्थ देता था (लूका 22:43)। स्वर्गदूतों ने उसके पुनरुत्थान की घोषणा की (यूहन्ना 20:12) और उसके वापस आने का आश्वासन दिया (प्रेरितों 1:10, 11)। वे उसके सेवकों के सहायक थे और एक ने तो पतरस को जेल से छूटने में सहायता भी की (प्रेरितों 5:19)। एक फिलिप्पुस को यह बताकर कि कब और कहां जाना है, सुसमाचार प्रचार में सहायक भी था (प्रेरितों 8:26)।

''सेवा टहल करने वाली'' के लिए शब्द (*leitourgikos*) का अर्थ ''दासों की तरह सेवा करना'' नहीं, बल्कि ''किसी विशेष पद या कार्य में परमेश्वर की सेवा करना है।'' इस प्रकार का काम याजक करता था, जब वह वेदी के पास खड़ा होता था। पत्री के लेखक ने भी दूसरा शब्द *diakonia* स्वर्गदूतों के प्रयासों के लिए लिया, जिसका अनुवाद ''सेवा'' होता है।

थोमस हेवट का सुझाव है कि ''सेवा टहल'' ''परमेश्वर की सेवा'' को दिखा सकता है और ''सेवा'' ''मनुष्यों की सेवा के लिए हो सकता है।'' परन्तु उसने माना की यह ''यहां संदेहपूर्ण है क्योंकि *diakonia* उनके लिए जो *उद्धार के वारिस* हैं परमेश्वर की सेवा का संकेत देता है। ...''[48] LXX में ''सेवक'' के लिए शब्द (*leitourgika*) उनके लिए इस्तेमाल हुआ है, जो तम्बू और मन्दिर में सेवा करते थे; इस कारण यह ''ईश्वरीय सेवा'' थी। इसके लिए यह आवश्यक नहीं है कि मूल *latreia* शब्द का अर्थ ''आराधना'' है। ''ईश्वरीय सेवा'' में कोई भी कार्य सम्मिलित है जिसकी परमेश्वर ने आज्ञा दी हो, इसमें ''आराधना'' हो भी सकती है और नहीं भी।

स्वर्गदूतों को दूसरी सदी के यहूदी लेखों में ''आत्माएं'' कहा गया है।[49] परमेश्वर के लिए संदेश ले जाकर स्वर्गदूतों ने दानिय्येल (दानिय्येल 9:21–23) और पतमुस पर यूहन्ना पर

सच्चाइयां प्रकट कीं (प्रकाशितवाक्य 1:1; 5:2; 7:2; 10:9, 10; 11:1; 14:8, 9, 15, 18; 16:5-8; 17:7; 18:1-3; 19:17, 18; 22:6, 9-11)। उन्होंने यूहन्ना को कई सांकेतिक दर्शन और प्रदर्शन दिए। पुराने नियम में उन्होंने सदोम को बचा लेना था यदि उन्हें दस धर्मी लोग मिल जाते, जिसकी उन्होंने मांग की थी (उत्पत्ति 18:32—19:15)।

स्वर्गदूत चाहे पुत्र के समान नहीं हैं और उच्च स्थान पर विराजमान परमप्रधान के दाहिने बैठ नहीं सकते हैं पर उन्हें **उद्धार पाने वालों अर्थात पवित्र लोगों के लिए सेवा करने को भेजा** जा सकता है। "भेजी जाती" "प्रेरित" (*apostolos*) के क्रिया रूप *apostellō* का अनुवाद है। उनका मिशन उद्धार पाए हुओं की सहायता करना है, बिल्कुल वैसे ही जैसे उद्धार का समाचार देने के लिए प्रेरितों को एक मिशन देकर भेजा गया था। वे केवल परमेश्वर के सेवक हैं, परमेश्वर के पुत्र नहीं।

स्वर्गदूत पवित्र लोगों के लिए क्या कर सकते हैं? हम उन बड़ी बातों के लिए जो वे हमारे लिए कर सकते हैं, भय से चकित होते हैं, फिर भी सहायता मिलने पर हमें पता नहीं होता कि वह कहां से मिली। जब हम कलीसिया में आ जाते हैं तो हम धर्मियों की आत्माओं के उस बड़ी सेना और स्वर्गदूतों की असंख्य सेना का भाग भी बन जाते हैं (इब्रानियों 12:22, 23)। वे इतने बहुतायत में और सेवा करने को तैयार हैं कि यीशु जब गिरफ्तार होने को था, तब वह "बारह पलटनों" को बुला सकता था (मत्ती 26:53)। यदि एक "पलटन" 6,000 की रोमी पलटन के बराबर हो तो यह टोटल 72,000 स्वर्गदूतों का हो जाना था; हमारे पास तो उससे कहीं अधिक हैं!

इसलिए यह जानना आश्चर्य की बात नहीं है कि वे आज मसीही लोगों की सहायता करते हैं। हम जानते हैं कि उन्हें हमारे उद्धार में गहरी दिलचस्पी है और जब यह हो जाता है तो वे आनन्द करते हैं (लूका 15:7, 10)। उन्हें अवश्य पता होता है कि कब हमारा उद्धार हुआ और कब हम खोए हुए रहते हैं। जिब्राइल के साथ वे निश्चित रूप में परमेश्वर की उपस्थिति में खड़े रहते हैं (लूका 1:19)। यीशु ने इस बात को प्रकट किया कि वे उन "छोटे से छोटे" लोगों की भलाई के लिए जिन से कलीसिया बनती है, चिंतित रहते हैं (मत्ती 18:10)। वे तो हमारे उद्धार के मिलने से पहले भी हम में दिलचस्पी रखते हुए लगते हैं (1 पतरस 1:10-12)।

इब्रानियों 12:22 चाहे इस बात का प्रमाण देता है कि मसीही लोग "लाखों स्वर्गदूतों" की विशेष सहभागिता में आए हैं, पर यह स्पष्ट नहीं किया गया है कि वे हमारे लिए क्या करते हैं। 1:14 में बताया गया उद्धार चाहे भविष्य में मिलने वाला है, परन्तु हमें पूर्वाभास की आशीष अभी से मिली हुई है। हमें बताया गया है कि "जिस समय हम ने विश्वास किया था, उस समय के विचार से अब हमारा उद्धार निकट है" (रोमियों 13:11)। एक उद्धार है, जो "आने वाले समय में प्रकट" किया जाएगा (1 पतरस 1:5)।

यह विचार कि स्वर्गदूत हर मसीही को वह करने की सामर्थ देते हैं, जो सही है, लोगों द्वारा किया जाने वाला दावा है न कि पवित्र शास्त्र द्वारा। यदि स्वर्गदूत सचमुच में ऐसी सामर्थ देते हैं तो वे इसे इस्तेमाल करने की अनुमति बहुत कम लोगों को देते हैं! अलौकिक प्रकाशन और प्रेरणा प्रेरितों को दी गई थी (यूहन्ना 16:12, 13; 14:26; देखें मत्ती 10:19, 20), परन्तु उन्हें भी अपने जीवनों में सारे पाप पर जय पाने की शक्ति नहीं दी गई थी। उन्हें भी उसे पाने के लिए हमारी तरह ही आत्मिक रूप में बढ़ना आवश्यक था (1 पतरस 2:1, 2; 2 पतरस 1:5-11; 3:18)।

अपने उपाय के द्वारा परमेश्वर ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न कर सकता है जिन से हमें पाप के ऊपर विजय पाने के लिए अपने विश्वास को लागू करने में सहायता मिल सके। परन्तु वह आज किसी व्यक्ति को राजमार्ग से उठाकर हानि के मार्ग में से सुरक्षित नहीं उठाता है जैसे फिल्म के दृश्य में स्वर्गदूतों को दिखाया जा सकता है।

स्वर्गदूतों की सबसे बड़ी सेवा उनके लिए की जाती है, जो उद्धार पाते हैं। पवित्र शास्त्र में ऐसी कोई प्रतिज्ञा नहीं मिलती कि वे गैर मसीही लोगों की रक्षा करेंगे या उनकी सेवा करेंगे।

प्रासंगिकता

परमेश्वर अपने पुत्र के द्वारा बात करता है (1:1-3)

मनुष्य के लिए परमेश्वर का प्रकाशन हमारे प्रभु, उसके पुत्र मसीह के द्वारा मिला है। परमेश्वर और मसीह का पूर्ण स्वभाव केवल लिखित वचन में दिया गया है। इस सच्चाई में क्या आवश्यक है ?

परमेश्वर को अपना वचन स्पष्ट और समझ आने योग्य बनाना आवश्यक था, नहीं तो यह बेकार और अनुचित होता। मनुष्य के लिए परमेश्वर की ओर से मिले समझ आने योग्य संदेश के बिना उद्धार का कोई मार्ग न होता। उसने निर्देशों को स्पष्ट कर दिया है, जो हमारे उद्धार के लिए आवश्यक हैं।

हमें उसके वचन की समझ के लिए अपने आपको देना आवश्यक है। हमें इसे समझने की आज्ञा दी गई है (इफिसियों 5:17)। यदि हम पिता की इच्छा को पूरा करने के इच्छुक हैं तो हम उसकी शिक्षा को जान सकते हैं (यूहन्ना 7:17)।

हमें उसके वचन की समझ में बढ़ना आवश्यक है ताकि हम दूसरों को सिखा सकें। हमें परमेश्वर के वचन के ज्ञान के द्वारा बढ़ने को कहा गया है (1 पतरस 2:2; 2 पतरस 3:18)। वचन का सही इस्तेमाल हमें शिक्षक बनने में सहायक होता है (इब्रानियों 5:12-14)। ''ठोस आहार'' का अध्ययन करना हमें सिद्ध बनने में सहायक होता है और परमेश्वर की सच्चाई की अग्रिम शिक्षाओं से प्रेम करना सिद्धता का पक्का चिह्न है।

व्यक्तिगत परमेश्वर पर विश्वास (1:1, 2)

यह विश्वास करने की आवश्यकता कि परमेश्वर ने बाइबल में हमारे साथ मसीह के द्वारा बात की है, जीवन के अनुभवों में स्पष्ट है।

बहुत से लोग अपने नैतिक निर्णयों से उलझन में हैं क्योंकि उन्हें बाइबल का ज्ञान नहीं है। निजी परमेश्वर में विश्वास अनिवार्य है; बिना उस विश्वास के हम समाज के ताने – बाने का नाश करते हैं। *नैशनल रिव्यू* के एक लेख में विलियम एफ. बक ने कहा है कि अवैव्यक्तिक परमेश्वर का विचार धर्म से तीन R छीन लेता है: यह ''*revelation*'' (प्रकाशन), ''*regeneration*'' (नया जन्म) और ''*responsibility*'' (ज़िम्मेदारी) को छीन लेता है।[50]

यदि हमारा कोई व्यक्तिगत परमेश्वर नहीं है, जिससे हम जवाबदेह हों तो हर व्यक्ति अपना ही ईश्वर बनकर सभी मामलों में अन्तिम अधिकार बन जाता है। ऐसी सोच के बढ़ने और काबिज

होने से निश्चय ही अपराध तेज़ी से पैर पसार लेता है। आम लोगों के लिए अराजकता और अव्यवस्था जीने का ढंग बन जाती है। जब कोई जाति परमेश्वर के ठुकराने के अन्त तक पहुंच जाती है तो हर घर किला बन जाता है और हर किसी के पास आत्मरक्षा का हथियार होता है।

गुयाना, दक्षिणी अमेरिका में 1989 में प्रचार के मिशन के दौरान मैंने निर्धन और बुज़ुर्ग लोगों की मुर्गियां चुराए जाने की शिकायतें सुनीं, जिनके पास अपनी कोई रक्षा का साधन नहीं था। हर घर में थोड़ी बहुत बाड़ होती थी जबकि धनवानों के घरों के आस-पास ऊंचे और लोहे की तारों वाली बाड़ होती थीं। 2003 तक यह स्थिति और खराब हो गई जिससे मिशनरी वापस जाने से डरते थे। वहां बहुत से लोगों के जीवनों में से परमेश्वर को निकाल दिया गया था।

फर्क किससे पड़ता है?

पुराने नियम के नबी चाहे जितने महत्वपूर्ण थे पर उन्हें पुत्र से नहीं मिलाया जा सकता था, जो नई वाचा देने के लिए आया था। इब्रानी लोग पुरानी और नई वाचा के बीच स्पष्ट अन्तर करते थे, जिनमें से कोई भी अन्तर अन्तिम दूत के स्वभाव से बड़ा नहीं होता था। स्पष्ट नहीं होता था। पुराने नियम के दूत महिमामय सच्चाई लेकर आते थे, परन्तु अब हमारे पास कुछ ऐसा है जो अत्यधिक उत्तम है।

''थोड़ा-थोड़ा ... भांति-भांति से होने के कारण पुरानी वाचा अधूरी थी; नई वाचा सम्पूर्ण और अन्तिम है।'' यह ''विश्वास ... जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था'' (यहूदा 3)। इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर ने जो दिया है वह उसके पवित्र लोगों के लिए सदा के लिए एक ही बार दी गई सच्चाई है।

पुत्र केवल माध्यम से जिसके द्वारा पिता बात करता था, बड़ा था। वह, वह माध्यम है जिसके द्वारा सब कुछ रचा गया और जो सब वस्तुओं का वारिस है (आयत 2; यूहन्ना 1:1-3)। आश्चर्यों का आश्चर्य! हम उसके साथ ''संगी वारिस'' (बराबर के वारिस) भी बनते हैं (रोमियों 8:17)। हम पुत्र के सम्बन्ध में इन महिमामय टिप्पणियों को यूं ही नज़रअन्दाज कैसे कर सकते हैं?

स्वर्ग में सब कुछ स्पष्ट कर दिया जाएगा। जब ''उसके तत्व की छाप'' (आयत 3) स्पष्ट हो जाएगी तो निश्चय ही हम इसमें और आनन्द करेंगे। उस तैयार की हुई जगह के लिए तैयार होने के लिए हमें अभी भी उत्तम बात के लिए और भी ध्यान लगाने की आवश्यकता है। मसीह के विषय में इन आयतों को पढ़ने के लिए गाने की आवश्यकता है, ''मसीह, हम सब तुझे महिमा देते हैं'' और ''जगत के लिए मसीह हम गाते हैं।''

पुत्र के संदेश को ग्रहण करना

सुसमाचार के संदेश में हमें अब तक की सबसे बड़ी सच्चाई मिली है। हम यहां क्यों हैं, हम कहां से आए, और हम कहां जा रहे हैं, को जानने को किसी से मिलाया नहीं जा सकता। यह उत्तर केवल बाइबल देती है।

मसीह का संदेश सुनाने का अर्थ मसीह का प्रचार करना है। हम उसकी शिक्षा को सचमुच में थामे रहे, बिना मसीह को पकड़ने का दावा नहीं कर सकते। विशेषकर इब्रानियों की पुस्तक से

हमें पता चलता है कि पुराने नियम का संदेश पुत्र के बड़े प्रकाशन के लिए तैयार करने के लिए किया गया था। यह सब मसीह की ओर ध्यान दिलाता था। मृत सागर के पत्रों को लिखने वालों को अपने आप को लगा कि वे समय के अन्त के छोर पर हैं। कम से कम थोड़ा, वे गलत थे क्योंकि वे पवित्र शास्त्र वाले मसीह को नहीं जानते थे। उनका ''धार्मिकता का सिखाने वाला'' मसीहा नहीं था।[51]

परमेश्वर हम से अब केवल पुत्र के द्वारा बात करता है। इस सच्चाई पर रूपांतर की कहानी से ज़ोर दिया गया है (मत्ती 17:1–8; मरकुस 9:2–7; लूका 9:28–36)। उस अवसर पर परमेश्वर की आवाज़ ने घोषणा की थी ''यह मेरा प्रिय पुत्र है जिस से मैं प्रसन्न हूं: इस की सुनो'' (मत्ती 17:5)। अपने अधिकार के रूप में आज हमें केवल मसीह के वचन की सुननी चाहिए।

बेशक जो प्रेरितों के संदेश को ग्रहण करते हैं, वे मसीह को ग्रहण कर रहे होते हैं (मत्ती 10:40)। हमें यीशु का लगभग कुछ भी पता न चलता यदि उन के द्वारा न बताया जाता जिसे उस ने अपना संदेश देकर भेजा था। रूपांतर वाली घोषणा के तुरन्त बाद पवित्र शास्त्र कहता है कि ''यीशु अकेला पाया गया'' (लूका 9:36)। हमारा प्रचार इस आश्वासन पर केन्द्रित होना चाहिए कि उसने मूसा और एलिय्याह की जगह लेकर उन्हें पीछे कर दिया। यानी व्यवस्था और नबियों को। सब बातों में हमारे अधिकार के रूप में केवल वही अकेला खड़ा है। यीशु के बारे में हमें जो कुछ भी पता चलता है वह उसकी सामर्थ दिए हुए लेखकों से ही है। इस कारण परमेश्वर के पुत्र को भेजना बाइबल के इतिहास की हमारी समझ की मुख्य बात थी।

यीशु का प्रकाशन विलक्षण है। रेमण्ड ब्राउन ने उन संदेहों की बात की है, जो आज यीशु के परमेश्वर होने के सम्बन्ध में संसार में तेजी से फैल रहे हैं। उसने प्रभावशाली रूप में उत्तर दिया, ''परन्तु इब्रानियों की पुस्तक हमें मसीह का परिचय देती है, जिसका सम्पूर्ण पाप रहित स्वभाव *विलक्षण प्रकाशन* है, जिसका *बलिदान* ही केवल हमारे उद्धार के लिए प्रभावकारी है, और जिस का स्वर्ग में और पृथ्वी पर *अधिकार* का कोई सानी नहीं है।''[52] यह सीधी सी बात है परन्तु इसका बचाव बहुत बड़ा है।

परमेश्वर, ''अगम्य'' (1:3; 1 तीमुथियुस 6:16)

क्या अंतरिक्ष में काला छेद अदृश्य परमेश्वर की भौतिक उपमा हो सकता है क्योंकि यह इतने घने पुंज वाला सितारा है कि इसका गुरुत्वाकर्षण प्रकाश को भी बचने नहीं देगा! हम अंतरिक्ष में काले छेद को देख नहीं सकते और हम इसके अस्तित्व को अंतरिक्ष में अन्य ''निकट की'' वस्तुओं पर इसके गुरुत्वाकर्षण खिंचाव के कारण जानते हैं। मान लिया कि यह उपमा ''अगम्य'' के विपरीत है क्योंकि काला छेद अपने निकट की हर वस्तु को बचने की सम्भावना में ले जाकर किसी भी निकट की वस्तु को खींचकर अपने पुंज का भाग बना लेता है। परन्तु यदि परमेश्वर ने कुछ ऐसा बनाया है जिससे कोई बच नहीं सकता तो निश्चय ही वह कोई ऐसी शक्ति बना सकता था जिसके पास कोई पहुंच नहीं सकता, या वह स्वयं ही वह शक्ति हो सकता है। कम से कम परमेश्वर की सामर्थ की महानता की यह एक उपमा है। उसने संसार में विलक्षण वस्तुएं बनाई हैं, जो हमारी सीमित सोच को दिखाई हैं कि ऐसी भौतिक वस्तुएं हैं जिन तक पहुंचा नहीं जा सकता या वे अगम्य हैं। परन्तु भौतिक संसार की कोई भी उपमा परमेश्वर के स्वभाव

को सही ढंग से वर्णन नहीं कर सकती।

''तत्व की छाप'' (1:3)

अगस्त 1988 में अलाबामा स्टेट हाउस में जाने के समय मैंने अपने हाथ में अलाबामा राज्य की आधिकारिक मोहर रखी हुई थी। उस मोहर में छपे हुए अक्षर राज्य के अधिकार को दर्शाते थे। चाहे यह मेरे पास थी और सम्भवतया मुझे कागज के टुकड़े पर इसकी छाप लगाने की अनुमति हो जाती, परन्तु मुझे इस्तेमाल करने का कोई अधिकार नहीं था। मेरे पास मोहर थी, परन्तु मेरे पास शक्ति नहीं थी, जिस कारण यह मेरे किसी काम की नहीं थी। इसके विपरीत यीशु परमेश्वर के पूर्ण अधिकार के साथ और ''उसके तत्व की छाप'' होने के कारण परमेश्वर की ओर से उसके ईश्वरीय अधिकार से बात कर सकता था। वह छाप था और उसके पास शक्ति थी।

उसका सामर्थ का वचन (1:3)

क्या हम सर्वशक्तिमान परमेश्वर और उसके अदृश्य पर काफ़ी प्रचार करते और सिखाते हैं ? यशायाह 40:22, 26–28 परमेश्वर की उन विलक्षण बातों को बताता है जिनका इब्रानियों में मसीह के लिए भी दावा किया गया है। उसकी सामर्थ पृथ्वी की समस्याओं का समाधान देती है। चाहे उसने हमें उन से निकालने की प्रतिज्ञा नहीं करता पर वह उन्हें हमारी भलाई के लिए काम करने के लिए देता है (रोमियों 8:28)।

सब वस्तुएं मसीह के कारण ''सम्भाली'' गई हैं। वह बात करता है और यह संसार खण्डित होने से बच जाता है। इसी प्रकार से परमेश्वर ने कहा, ''मछलियां हों जो तैरती हैं!'' और वे सामने आ गईं। यह अवधारणा परमेश्वर द्वारा सृष्टि किए जाने की बात से किसी भी और बात के लिए कोई स्थान नहीं रहने देती। ऐसा विकासवाद जो बिना हड्डी वाले से हड्डी वाले में बदल जाता है, केवल चट्टानों में ही मिलता है। ऐसे परिवर्तन का परिणाम विकासवाद को सही ठहराने वाले नियम को साबित करने के लिए आवश्यक होगा, परन्तु इसकी पुष्टि करने के लिए जीवा अवशेष में अत्यधिक ''त्रुटियां'' हैं। विकासवाद की ऐसी थ्यूरी को बाइबल द्वारा नकारा जाता है। परमेश्वर सब कुछ नियन्त्रित करता है जिसमें उसके काम करने वाले के रूप में यीशु उसके साथ है।

''पापों की शुद्धता'' (1:3)

यीशु ने हर आत्मा के लिए पाप से शुद्ध होने इसके दोष और अनन्त परिणामों के साथ उपाय किया। उसने नई वाचा पर मोहर करने और इसे लागू करने के लिए अपना लहू दे दिया (मत्ती 26:28)। कथित सांस्कृतिक कुलीन इसे गंवार और असभ्य विचार मानते हैं। वे इस विचार को कि कोई मनुष्यजाति को बचाने के लिए मरे या मर सकता है, एक तुच्छ विचार मानते हैं। परन्तु हमारे लिए जो विश्वास करते हैं यह एक सुन्दर कविता या मधुर गीत की तरह है। यह सब कहानियों में से सबसे बड़ी है। केवल कुछ ही बातें यह जानने से बढ़कर कि किसी ने इतना बड़ा बलिदान किया है या वह मर गया ताकि हम जी सकें, ही किसी से प्रेम करने के लिए काफ़ी है। इस संदेश में वह शक्ति है, जो किसी दूसरे में नहीं हो सकती। हमारे पापों की क्षमा पाने के

लिए कोई और तरीका नहीं हो सकता होगा, नहीं तो परमेश्वर उसका इस्तेमाल करता। मसीही लोग यह जानते हैं कि हमारा प्रेमी पिता जानता है कि हर कीमती चीज़ का मोल होता है। उसे मालूम था कि न्याय पाप की उचित अदायगी की मांग करता है और यह कि अधूरा अपने आप सिद्धता को नहीं पा सकता। इसलिए उसने बहुत बड़ी कीमत, प्रायश्चित का बड़ा मोल यीशु का लहू दिया।

यीशु या स्वर्गदूत? (1:4)

स्वर्ग स्वर्गदूतों का निवास है और वे महिमा में यीशु के साथ आएंगे (मत्ती 25:31)। ''बड़े वीर'' (भजन संहिता 103:20), वे पिता की बात को पूरा करते हैं; वे परमेश्वर के दूत हैं (भजन संहिता 104:4; NASB और KJV में तुलना करें) वे पवित्र हैं (मत्ती 25:31), वे परमेश्वर के सिंहासन के इर्द-गिर्द रहते हैं (प्रकाशितवाक्य 5:11)। क्या परमेश्वर संसार को उन्हीं के द्वारा नहीं चलाता है? क्या उन्हीं के द्वारा वह हमारी भलाई के लिए उपलब्ध करवाकर सभी काम नहीं करवाता, यदि हम उससे प्रेम रखते हों? (देखें रोमियों 8:28.)

जब इब्रानियों की पुस्तक लिखी गई उस समय कुछ लोग यीशु को ''स्वर्गदूत'' कहकर उसे ''उन आत्मिक जीवों से जिन्हें मनुष्यों के मामलों को प्रभावित करने वाले माना जाता था'' ऊंचा नहीं बनाते होंगे।[53] उसे स्वर्गदूतों से कहीं अधिक ऊंचा किया गया है।

उद्धरणों की एक शृंखला आरम्भ होती है (1:5)

आयत 3 भजन संहिता 110:1 के विचार की ओर संकेत करती है कि पुत्र परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठकर वहां से शासन करेगा। आयत 5 का आरम्भ पुराने नियम के सात उद्धरणों की शृंखला के साथ होता है, जिनमें से अधिकतर भजन संहिता में से हैं (2:7; 104:4; 45:6, 7; 102:25-27; 110:1)। अपवाद दूसरा और तीसरा उद्धरण हैं (जो 2 शमूएल 7:14 व्यवस्थाविवरण 32:43; LXX से लिए गए)। पहला कथन जिसे भजन संहिता 2:7 से लिया गया नये नियम के लोगों और कलीसिया के लिए बड़े महत्व का था; इसे बार-बार इस्तेमाल किया गया। भजन संहिता 2 को परमेश्वर के ''अभिषिक्त'' (*इब्रानी में मसीहा; यूनानी में ख्रिस्तोस*) के हवाले के कारण ही माना जाता था। नहीं तो इस पत्री में इस तर्क का इसके आरम्भिक पाठकों के लिए कोई महत्व नहीं होना था। यह कई प्रकार से यीशु के लिए लागू होता था। प्रेरितों ने प्रेरितों 4:25, 26 वाली प्रार्थना में भजन संहिता 2:1, 2 से उद्धृत किया। भजन संहिता 2:7 को इब्रानियों 1:5 में और फिर 5:5 में उद्धृत किया गया। भजन संहिता 2:8, जो कहता है, ''मुझ से मांग, और मैं जाति-जाति के लोगों को तेरी सम्पत्ति होने के लिए, और दूर-दूर के देशों को तेरी निज भूमि बनने के लिए भेजूंगा,'' उस सच्चाई का संकेत देता है कि मसीह ''सारी वस्तुओं का वारिस'' है (इब्रानियों 1:2)। भजन संहिता 2:7 के शब्दों को इब्रानियों 1:5 में स्वर्गदूतों पर यीशु की श्रेष्ठता पर ज़ोर देने के लिए इस्तेमाल किया गया। इन शब्दों को प्रेरितों 13:33, 34 में भी उद्धृत किया गया है, जहां पौलुस ने इन्हें मसीह के पुनरुत्थान के लिए लागू किया। भजन का इस्तेमाल मसीह के पुत्र होने के प्रेरितों के विश्वास का संकेत देता है और सुझाव देता है कि यहूदियों को यह दिखाने के लिए कि यीशु ही मसीहा था यह भजन

आवश्यक था। विश्वास के प्रतिरक्षक इस आयत का इस्तेमाल यहूदी मित्रों के साथ बातचीत में अभी भी सही और प्रभावी ढंग से कर सकते हैं, यदि उनके मित्र अपने ही पवित्र शास्त्र पर विश्वास करते हों।

पवित्र शास्त्र की खामोशी (1:5)

परमेश्वर ने कभी किसी स्वर्गदूत को ''तू मेरा पुत्र है'' नहीं कहा, इस कारण यह सुझाव देना बिल्कुल गलत है कि सृजित स्वर्गदूत को कभी इस अभिव्यक्ति के द्वारा सम्बोधित किया जाए। खामोशी अनुमोदक नहीं, बल्कि प्रतिबंधक है! इस बात को न देख पाने का अर्थ बाइबल की शिक्षा में जोड़ने के लिए इसकी खामोशी के अर्थ निकालना है, जो कि पवित्र शास्त्र के सम्मान और उसके अधिकार से जुड़े हर उच्च और पवित्र नियम का उल्लंघन है। यदि हम ऐसे तर्क को मानकर पवित्र शास्त्र की खामोशी के महत्व की उपेक्षा करें तो बाइबल की शिक्षा हर ''नई बात'' को सही माना जाएगा। जो लोग कलीसिया में अनधिकृत बदलाव लाना चाहते हैं उन्हें वे इस बात का तर्क दें कि खामोशी का अर्थ अनुमति है, परन्तु इब्रानियों द्वारा उनके इस ढंग को पूरी तरह से नकार दिया जाता है।

''तू मेरा पुत्र है'' (1:5)

यीशु एक ही समय में परमेश्वर का पुत्र और दाऊद का पुत्र दोनों था। हम उसे बहुत अधिक महिमा नहीं दे सकते। उसके व्यक्तित्व या स्वभाव को किसी भी प्रकार से कम करने का अर्थ उसे उसके अयोग्य बना देना है। 1:5 में दो उद्धरण 2 शमूएल 7:14 और 1 इतिहास 17:13 से लिए गए हैं। पहली प्रासंगिकता सुलैमान के लिए थी परन्तु उसका बड़ा और अन्त में पूरा होना मसीह में था। 2 शमूएल 7:14 का दूसरा भाग (''यदि वह अधर्म करे'') मसीह के लिए लागू नहीं हो सकता, क्योंकि उसने कोई पाप नहीं किया (1 पतरस 2:21, 22)। हमें अपने सुनने वालों को यह समझने में सहायता करनी चाहिए कि कुछ भविष्यद्वाणियों के दोहरे अर्थ होते हैं।

परमेश्वर आज भी बात करता है (1:7)

1:7 में ''कहता है'' से हमें बड़ा प्रोत्साहन मिलता है। हम जानते हैं कि परमेश्वर ने पवित्र शास्त्र के द्वारा बात की और इस आयत से हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि वह उसी माध्यम अर्थात पवित्र शास्त्र के द्वारा आज भी हम से बात करता है।

''हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन'' (1:8)

पवित्र शास्त्र में मसीह के परमेश्वर होने के सबसे स्पष्ट प्रमाणों में से एक 1:8 में मिलता है। परमेश्वर ने भजन संहिता 45:6, 7 में स्वयं यह गवाही दी। पिता द्वारा यीशु को ''हे परमेश्वर'' कहा गया। जो वह है, उसके कारण हमें उसे आदर और महिमा देना आवश्यक है। कहते हैं कि यीशु ने स्वयं कभी परमेश्वर होने का दावा नहीं किया। शायद उसने उन शब्दों में घोषणा नहीं की, परन्तु नये नियम में बार-बार इसका संकेत मिलता है। उदाहरण के लिए उसने थोमा को डांटा नहीं, जिसने कहा था, ''हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर!'' (यूहन्ना 20:28, 29)। निश्चय ही

यदि हम उसे इसी प्रकार से मान लेते हैं तो वह हमें आशीष देगा।

''न्याय का राजदण्ड'' (1:8)

''न्याय'' सीधे तौर पर वह करने का परिणाम है, जो सही है। हमें तब तक न्यायी या धर्मी नहीं माना जा सकता, जब तक हम सही काम नहीं करते हैं (देखें 1 यूहन्ना 3:7)। परमेश्वर ने केवल सही करने की ही आज्ञा दी है। यानी उसने कभी किसी को गलत करने की आज्ञा नहीं दी (भजन संहिता 119:172)।

यूहन्ना डुबकी देने वाले ने जब यीशु को बपतिस्मा देने से बचने की कोशिश की, तो प्रभु ने उससे विनती की, ''अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है। तब उसने उनकी बात मान ली'' (मत्ती 3:15)। इससे यूहन्ना संतुष्ट हो गया। यीशु ने भजन लिखने वाले के विचार से सहमति जताई: ''तेरी सब आज्ञाएं धर्ममय हैं'' (भजन संहिता 119:172)। उस ने परमेश्वर की सब आज्ञाओं को मानने की ठानी हुई थी। स्पष्टतया यूहन्ना को इस बात की समझ नहीं आई कि यीशु जैसे भले व्यक्ति को बपतिस्मा लेने की क्या आवश्यक थी जिसका वह प्रचार कर रहा था, क्योंकि यह तो ''पापों की क्षमा'' के लिए था (देखें मरकुस 1:4 और लूका 3:3)। परन्तु यीशु ने पृथ्वी पर रहते समय बिना किसी टाल-मटोल के परमेश्वर की सब आज्ञाओं को मानने के लिए अपने आपको दे दिया। उसने कहा कि ''अब तो'' ऐसा ही करना उचित था जो नियम के अपवाद को दिखाता है क्योंकि उद्धारकर्त्ता के लिए हर उस आज्ञा को मानना जो उसके चेलों पर लागू होती थीं आवश्यक था। चेले को अपने प्रभु से बड़ा होने का दावा नहीं करना चाहिए परन्तु जब हम किसी छोटी से छोटी आज्ञा को मानने से इनकार करते हैं तो हम यही होने का दावा करते हैं।

यीशु धार्मिकता से प्रेम रखता है (आयत 9)। वह भजन लिखने वाले के साथ यह कहेगा, ''अहा! मैं तेरी व्यवस्था में कैसी प्रीति रखता हूं! दिन भर मेरा ध्यान उसी पर लगा रहता है'' (भजन संहिता 119:97)। क्या वह व्यवस्था या परमेश्वर की आज्ञाओं के अलावा किसी और बात पर ध्यान करता था? यीशु का मुख्य फोकस अपने पिता की इच्छा को पूरा करना था, बिल्कुल वैसे जैसे हमारा भी होना चाहिए।

प्रभु अधर्म से वैर रखता है (1:9)

धार्मिकता के काम करने और धार्मिकता से प्रेम करने के यीशु के व्यवहार के उलट कुछ लोग धार्मिकता से वैर रखते हैं। हमारा प्रभु और उद्धारता इसके विपरीत है क्योंकि वह अधर्म से बैर रखता है। ''अधर्म'' के लिए शब्द मूलतया ''नियम के विरुद्ध'' (*anomia*) है और इसका अर्थ ''अवैधता, नियम का उल्लंघन, या आम बुराई'' है। मरकुस 7:20-23; 1 कुरिन्थियों 6:9, 10; गलातियों 5:19-21; और 1 पतरस 4:1-3 सहित कई आयतें इस बात की घोषणा करती हैं कि ''नियम के विरुद्ध'' होने का क्या अर्थ है।

धार्मिकता से प्रेम रखना और उसके साथ ही अधर्म से बैर न रखना असम्भव है (मत्ती 6:24; याकूब 4:4; 1 यूहन्ना 2:15-17)। जो कोई यह सोचता है कि वह संसार के साथ समझौता करके भी मसीह के पीछे चल सकता है, वह बड़ी गम्भीर गलती कर रहा है क्योंकि

यदि कोई प्रभु के साथ नहीं है, तो वह उसके विरुद्ध है (मत्ती 12:30)। यीशु पैसे का कारोबार करने वालों पर क्रोधित हुआ था जिन्होंने उसके पिता के घर को दूषित कर दिया था (यूहन्ना 2:13-17)। गलत काम के लिए उसकी घृणा ऐसी बात थी जो उसे "खा गई" थी। यीशु झूठी शिक्षा से बैर रखता है (प्रकाशितवाक्य 2:15)। हम इससे कम बैर कैसे रख सकते हैं।

हमें "धर्मी लूत को जो अधर्मियों के अशुद्ध चाल-चलन से बहुत दुखी था, छुटकारा दिया (क्योंकि वह धर्मी उन के बीच में रहते हुए, और उन के अधर्म के कामों को देख देखकर, और सुन सुनकर, हर दिन अपने सच्चे मन को पीड़ित करता था)" (2 पतरस 2:7, 8)। यीशु के पास पवित्र शास्त्र के शैतान के उपयोग के खण्डन करने की न केवल शक्ति और ध्यान था बल्कि उसे चले जाने की आज्ञा देने की शक्ति भी थी ("हे शैतान दूर हो जा!"; मत्ती 4:10)। मसीह में हमें वही करने की नैतिक शक्ति मिली है यदि हम विश्वास से इसे करें (याकूब 4:7)। यीशु यरूशलेम के पाप पर उसे उसके ठुकराने के परिणामों को जानकर रोया था (19:41; मत्ती 23:37-39)। हमारा उत्तर क्या है? क्योंकि वह अधर्म से बैर और धर्म से प्रेम रखता था इस कारण उसे "हर्षरूपी तेल से ... अभिषेक किया" गया (इब्रानियों 1:9)। निश्चय ही धार्मिकता का मुट पाने पर हमें बड़ा आनन्द मिलेगा (2 तीमुथियुस 4:8)।

"हे प्रभु, आदि में, तू" (1:10-12)

परमेश्वर पिता ने यीशु को "प्रभु" कहा। मीी 22:43, 44 में यीशु द्वारा इस तथ्य पर ज़ोर दिया गया था, जब उसने भजन संहिता 110:1 से उद्धृत किया। स्वर्गदूतों ने उसके जन्म के समय उसे "मसीह प्रभु" कहा (लूका 2:11)। पृथ्वी पर रहते समय उसके चेले उसे "गुरु और प्रभु" कहते थे (यूहन्ना 13:13)। इस शब्द का अर्थ कई बार "श्रीमान" की तरह है जैसा कि शाऊल के उत्तर में सुझाव मिलता है, जब उसे मालूम नहीं था कि वह किससे बात कर रहा है (प्रेरितों 9:5)। थोमा को मालूम था कि किससे बात कर रहा है जब उसने कहा, "हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर!" (यूहन्ना 20:28)। "प्रभु" (*kurios*) शब्द का अर्थ जो अधिकार में श्रेष्ठ है या जिसके हाथ में नियन्त्रण है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि यीशु ने कहा कि वह "सब्त के दिन का स्वामी है" (मरकुस 2:28), जिसका अर्थ यह है कि उसने सब्त का नियम दिया। "प्रभु" होने के कारण वह जैसे चाहता वैसे इसे चला सकता था, चाहे इसे हटाने की ही बात क्यों न हो!

जब हम मसीह को "प्रभु" मानकर अंगीकार करते हैं (रोमियों 10:9; 1 पतरस 3:15) तो हम उसे अपने दिनों के हाकिम और संचालक, नियन्त्रक के रूप में मानते हैं जिसके अधीन अपने आपको दे देना आवश्यक है। जब हम ऐसा करते हैं तो हमें पता चल जाता है कि हमारे जीवनों के लिए क्या अच्छा और स्वीकार्य और सम्पूर्ण है (रोमियों 12:1, 2)। जब प्रभु के रूप में हम अपने आपको उसे सौंप देते हैं तो हमारी समझ की आंखों से पर्दा उठ जाता है और हम उस बात के लिए धन्यवाद देते हैं जिसकी हमें पहले समझ नहीं थी (2 कुरिन्थियों 3:14)। यहूदी मसीहियों को मूसा के पक्ष में अपनी पूर्वधारणा को बदलना आवश्यक था! तभी वह पर्दा उठना था और उन्होंने यीशु को देख पाना था जो वास्तव में वह है।

"वस्त्र के समान पुराना" (1:10-12)

सारी पृथ्वी पुरानी हो रही है और एक दिन मिट जाएगी। रेअ सी. स्टैडमैन ने कहा है, ''यह उसका अद्‌भुत काव्य विवरण है जिसे वैज्ञानिक एंट्रोपी अर्थात उपक्रम माप का नियम, या थर्मोडायनामिक्स यानी उषमागति की का दूसरा नियम कहते हैं, जो संसार को घटते हुए देखता है। परन्तु ऊपर जो सृष्टिकर्त्ता है, उसके अपने नियम हैं और वह कभी नहीं बदलता है।''[154] सचमुच के विज्ञान और पवित्र शास्त्र के तालमेल पर सबक के लिए यह बेहतरीन आधार है।

और सब कुछ चाहे बदल जाए परन्तु मसीह और उसका संदेश नहीं बदलता है! सनातन मसीह हमारी हर मनोवैज्ञानिक और आत्मिक आवश्यकता को पूरी तरह से पूरा कर सकता है। विज्ञान और तकनीक में चाहे आश्चर्यजनक विकास हुआ है परन्तु हम अभी भी वही लोग हैं जिन्हें आज से दो हज़ार साल पहले दिए गए उद्धार दिलाने वाले यीशु के सुसमाचार की आवश्यकता है। ''परमेश्वर को कोई बात कभी चकित नहीं करती है। कुछ भी ऐसा नहीं घटता है जिससे परमेश्वर निपट न सके। हमारे रास्ते में ऐसा कुछ नहीं आता जिसमें अपरिवर्तनीय, समसामयिक, अनन्काल तक वर्तमान काल परमेश्वर, यीशु मसीह विजय और आशीष न दिला सके।''[155]

''तू मेरे दाहिने बैठ'' (1:13)

परमेश्वर ने कभी किसी स्वर्गदूत को अपने दाहिने बैठने के लिए नहीं कहा है। किसी स्वर्गदूत से कभी इस प्रकार से बात नहीं की गई है, क्योंकि कोई स्वर्गदूत कभी ऐसे समर्थन और पदोन्नत्ति का अधिकारी नहीं रहा है। स्वर्गदूत उस प्रसन्न भीड़ में से हैं, जो मसीह के परम प्रकाशन, उसके विलक्षण व्यक्तित्व, उसके पूर्ण हुए कार्य, उसके सनातन ईश्वरीय होने और उसके बेमिशाल प्राप्ति को समझते हैं।

भविष्यद्वाणी में बहुत पहले घोषणा किए जाने वाली मसीह की विलक्षण स्थिति को शायद यीशु के महिमा मय ऊपर उठाए जाने के बाद स्वर्ग के दरबार में प्रवेश करते समय सब स्वर्गीय सेना के लाभ के लिए दोहराया गया था (देखें दानिय्येल 7:13, 14)। हमें प्रतिदिन आनन्द करना चाहिए कि हमारा प्रभु सारे संसार पर सबसे ऊपर राज करता है।

स्वर्गदूत, आश्चर्यकर्म और उपाय (1:14)

नया नियम आश्चर्यकर्मों के हवालों से भरा हुआ है। परन्तु आज स्पष्ट है कि स्वर्गदूतों के द्वारा की जाने वाली या दिखाई देने वाली गतिविधियां हर प्रकार के अलौकिक और आश्चर्यकर्म के प्रदर्शनों सहित बन्द हो चुकी हैं। आश्चर्यकर्मों के द्वारा पूरी तरह से पुष्टि किए जाने के बाद पवित्र शास्त्र सम्पूर्ण है (इब्रानियों 2:1-4)। आश्चर्यकर्मों का बंद हो जाना प्रकाशन के बंद होने का स्वाभाविक परिणाम था, ताकि कोई और पवित्र शास्त्र अब न लिखा जाए। नये प्रकाशन और आश्यर्चकर्म साथ-साथ होते थे। यदि आज परमेश्वर नया प्रकाशन देता हो तो वह आश्चर्यकर्म ही होते रहने चाहिए और होते रहेंगे।

समस्या यह है कि बहुत से लोग ''आश्चर्यकर्म'' की सही परिभाषा नहीं देते हैं। बाइबल के अनुसार आश्चर्यकर्म हमेशा स्पष्ट रूप में ईश्वरीय शक्ति को दिखाने वाला *अलौकिक* कार्य होता है। एक दिन यदि सूर्य पश्चिम से निकले, तो यह आश्चर्यकर्म होगा क्योंकि यह प्रकृति के

नियम के उलट है। यीशु ने आश्यर्चकर्म किया या पानी को एक दम दाखरस में बदलकर ''चिह्न'' दिखाया (यूहन्ना 2:11)। बाइबल की घटनाओं को भी आश्चर्यकर्मों के रूप में दिखाते समय हमें बहुत सावधान होना आवश्यक है। यदि कोई घटना परमेश्वर के सीधे हस्तक्षेप का संकेत देने के अर्थ में उससे जुड़ी नहीं है तो हो सकता है कि यह आश्चर्यकर्म न होकर उपाय ही हो।

उदाहरण के लिए यूसुफ सपनों का अर्थ बता सकता था जो वह परमेश्वर की ओर से सीधे प्रकाशन के बिना नहीं कर सकता था (उत्पत्ति 40; 41)। ऐसे प्रकाशनों का आश्चर्यकर्म होना आवश्यक था। क्या यह आश्चर्यकर्म था कि पिलानेहारों के प्रधान (साकी) को यूसुफ की बात भूल गई थी और बाद में उसे वह याद आ गया? (देखें उत्पत्ति 40:23.) मिस्र की सभी घटनाएं उसी साकी के भूल जाने पर टिकी हुई थीं। कोई भविष्यद्वाणी को कैसे भूल सकता है जिसमें उसके जीवन और उसकी स्वतन्त्रता की गारंटी दी गई हो? ऐसा तो अवश्य परमेश्वर द्वारा ही किया गया होगा। मैं रोज़ चीज़ें भूल जाता हूं, परन्तु मुझे याद न रहने वाली वे बातें क्या आश्चर्यकर्म हैं? एक स्वर्गदूत ने फिलिप्पुस से बात की (प्रेरितों 8:26) और उसे बताया कि वह आगे बढ़े, जो कि निश्चित रूप में आश्चर्यकर्म के द्वारा दिया गया प्रकाशन था न कि केवल उसकी भावना। परन्तु फिलिप्पुस को उस मार्ग तक चलकर जाना था जो गाजा को जाता था। वह एक आदमी को जो अपने रथ पर सवार यशायाह नबी की पुस्तक में से पढ़ रहा था सुनने के लिए बिल्कुल समय पर पहुंच गया (प्रेरितों 8:27-39)। क्या उसके पहुंचने का सही-सही समय आश्चर्यकर्म था या उपाय? न तो फिलिप्पुस को और न ही खोजे को किसी स्वर्गदूत के द्वारा उठाया गया और रास्ते पर बिठा दिया गया, जो कि आश्चर्यकर्म होना था।

पवित्र शास्त्र में आश्चर्यकर्म वह था जिसमें ईश्वरीय सामर्थ का कार्य हो जो इतना साफ़ तौर पर अति मानवीय कार्य लगे कि कोई उसका इनकार न कर पाए (यूहन्ना 9:16, 17, 24-33)। यीशु के शत्रु भी उसके आश्चर्यकर्मों का इनकार नहीं कर सकते थे। वैज्ञानिक लोग आम तौर पर हमारे समय के कथित आश्चर्यकर्मों की प्राकृतिक व्याख्या बनाते हैं। यदि कोई प्राकृतिक व्याख्या तर्कसंगत और विश्वसनीय लगने वाली है तो यह दावा करना मूर्खता होगी कि यह घटना आश्चर्यकर्म थी। कुछ बातों को आज के प्राकृतिक विज्ञान के द्वारा समझाया नहीं जा सकता है परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि वे भविष्य में नहीं होगी। बाइबल के आश्चर्यकर्मों या ''चिह्नों'' या ''अचम्भों'' को इस प्रकार से समझाया नहीं जा सकता।

''स्वर्गदूतों के'' दर्शन

लोगों का एक समूह ''स्वर्गदूतों के'' दर्शन होने या किसी स्वर्गदूत की सहायता होने का दावा करता है। क्या हम किस्सों के प्रमाण को मान लें? नहीं, क्योंकि हमारा विश्वास ईश्वरीय प्रकाशन में है (रोमियों 10:17) न कि मानवीय कल्पनाओं में। त्रासदी यह है कि कुछ लोग यह सोचकर कि उन्हें किसी स्वर्गदूत की उपस्थिति का अनुभव हुआ है, ऐसे ''अनुभव'' पर अपने उद्धार के प्रमाण के रूप में निर्भर रहेंगे। स्वर्गदूत पृष्ठभूमि में सदा से हो सकते हैं, परन्तु परमेश्वर के पुत्र की तुलना तुलना में उनका कोई महत्व नहीं है। वे थोड़ी देर के लिए सामने आए थे, परन्तु यीशु हमारे उद्धार का कर्त्ता है और सदा रहेगा।

टिप्पणियां

[1]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन आफ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* 3रा संस्क., संशो. व संपा. फ्रैडरिक विलियम डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 2000), 450. [2]रॉबर्ट मिलिगन, *ए कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू द हिब्रूज़,* न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (सिनसिनाटी: चेस एंड हॉल, 1876; रिप्रिंट, नैशविल्ल: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1975), 48. [3]अपोक्रिफा की कुछ पुस्तकों जैसे 1 मक्काबियों, का कुछ ऐतिहासिक महत्व है; परन्तु वे ''पवित्र शास्त्र'' कहलाने के अयोग्य हैं। [4]थॉमस जी. लॉन्ग, *हिब्रूज़,* इंटरप्रेटेशन (लुईसविल्ले: जॉन नॉक्स प्रैस, 1997), 8. [5]ब्रूक फॉस वेस्टकोट, *द एपिस्टल टू द हिब्रूज़: द ग्रीक टैक्स्ट विद नोट्स एंड ऐस्सेज़* (लंदन: मैकमिलन एंड कं., 1889; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1973), 4. [6]एफ. एफ. ब्रूस, *द एपिस्टल टू द हिब्रूज़,* द न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1964), 3. [7]*ग्रेट टैक्स्ट ऑफ़ द बाइबल रिविज़िटड: फॉकनर यूनिवर्सिटी लैक्चर्स,* संपा. एम. फ्लॉयड बेली, मार्क ए. हॉवल एण्ड ऐलन वेब्स्टर (मोंटगोमरी, अलाबामा: फॉकनर यूनिवर्सिटी, 1993): 332 में जैक पी. लुईस, ''हिब्रूज़ 1:1-4: क्राइस्ट द प्रोफेट, प्रीस्ट एण्ड किंग।'' [8]फिलिप एजकुम्ब ह्युजस, *ए कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू द हिब्रूज़* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1977), 37. [9]वही। [10]ब्रूस, 3.

[11]ह्यूगो मेकोर्ड, *मेकोर्ड'स न्यू टैस्टामैंट ट्रांसलेशन ऑफ़ द एवरलास्टिंग गॉस्पल* (हैंडरसन, टैनिसी: फ्रीड-हार्डमैन यूनिवर्सिटी, 1988)। इस अनुवाद को अब ''फ्रीड-हार्डमैन'' अनुवाद कहा जाता है। [12]गलातियों 3:16, 19-29 में पौलुस ने ''वंश'' की अवधारणा की व्याख्या की। [13]वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *बी कॉन्फिडेंट: ऐन एक्सपोज़िटरी स्टडी ऑफ द एपिस्टल टू द हिब्रूज़* (व्हीटन, इलिनोय: विक्टर बुक्स हाउस, 1982), 18. [14]मिलिगन, 52-54. [15]साइमन जे. किस्टमेकर, *एक्सपोज़िशन ऑफ़ द एपिस्टल टू द हिब्रूज़,* न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1984), 28, एन. 3. [16]लुईस, 332. [17]ब्रूस, 4. हाल ही के और अध्ययनों से शब्दों के नाद के द्वारा भजनों को पहचानने के विचार पर संदेह डालती है। [18]मनचाहे पैटर्न में आकार देने के लिए इस्तेमाल होने वाले सांचे को ''डाई'' कहते हैं। यहां प्रयुकत शब्द रचना का मूल अर्थ सही था। [19]थियोडोर ऑफ़ मॉपसुएशिया *कमैंटरी ऑन जॉन;* ह्युजस, 44, एन. 21 में उद्धृत। [20]ह्युजस, 41.

[21]उदाहरण [ज्यों की त्यों लागू] नहीं की जा सकती, क्योंकि यह नहीं माना जाना चाहिए कि पुत्र औपचारिक रूप में पिता से उसी प्रकार अलग है जैसे मोहर उस ठप्पे से जो इससे लगता है। (डोनल्ड गुथरी, *द लैटर टू द हिब्रूज़: ऐन इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री,* द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1983], 66). [22]ब्रूस, 6. [23]वही, 8. [24]जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 15.5.3.136 में भी इसी अवधारणा का संकेत दिया गया है। [25]लुईस, 335; *टी. बी. हगियागाह* 12बी; *टी. लेवी* 3.4-6. [26]1QS 9:9-11. (यह कुमरान की गुफ़ा 1 में मिले पत्र की बात है।) [27]गुथरी, 73. [28]''मिदरश'' (*darash* से, ''व्याख्या'') पवित्र शास्त्र के यहूदी व्याख्यात्मक और एक्सजेटिकल लेखों के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द है। [29]नील आर. लाइटफुट, *जीज़स क्राइस्ट टुडे: ए कमैंट्री ऑन द बुक ऑफ़ हिब्रू* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1976), 64; लाइटफुट सी. एच. डॉड, *अकॉर्डिंग टू द स्क्रिप्चर्स: द सब-स्ट्रक्चर ऑफ़ न्यू टैस्टामैंट थियोलॉजी* (न्यू यॉर्क: चार्ल्स स्क्रिब्नर'स सन्स, 1953), 61-110. [30]लाइटफुट, 64-65; लाइटफुट ने आर. वी. जी. टास्कर, *द ओल्ड टैस्टामैंट इन द न्यू टैस्टामैंट* (लंदन: एससीएम प्रैस, 1954), 15 को उद्धृत किया।

[31]जॉर्ज बी. क्रेड, ''द एक्सजेटिकल मैथड ऑफ द एपिस्टल टू द हिब्रूज़,'' *कैनेडियन जरनल ऑफ़ थियोलॉजी* 5 (जनवरी 1959): 45. [32]ब्रूस, 16, एन. 76; ह्युजस, 59. [33]गुथरी, 74. [34]ब्रूस, 15. [35]रेय सी. स्टेडमैन, *हिब्रूज़,* द IVP न्यू टैस्टामेंट कमैंट्री सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1992), 28. [36]वियर्सबे, 22-23. विर्यसबे ने कहा कि यह सॉलोमन के लिए कहा गया चाहे अंतिम प्रासंगिकता यीशु मसीह के लिए है। लाइटफुट ने कहा, ''यह उच्च क्रम के पूर्व अस्तित्व ओर पद का संकेत देता है'' (लाइटफुट, 67)। [37]लाइटफुट, 60. [38]आर. सी. एच. लैंसकी, *द इंटरप्रेटेशन ऑफ द एपिस्टल टू द हिब्रूज़ एंड ऑफ़ द एपिस्टल ऑफ़ जेम्स* (कोलम्बस, ओहायो: वार्टबर्ग प्रैस, 1946), 51. [39]गुथरी, 76. [40]किस्टमेकर, 42.

[41]जेम्स थॉम्पसन, *द लैटर टू द हिब्रूज़,* द लिविंग वर्ड कमैंट्री (आस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1971), 32. [42]जॉर्ज वेसली बुचनन, *टू द हिब्रूज़: ए न्यू ट्रांसलेशन, कमेंट एंड कंक्लूज़ंस,* द एंकर बाइबल, अंक 36 (गार्डन

सिटी, न्यू यॉर्क: डबलडे, 1972), 20. [43]क्रेग आर. कोस्टर, *हिब्रूज़: ए न्यू ट्रांसलेशन विद इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री,* द एंकर बाइबल, अंक 36 (न्यू यॉर्क: डबलडे, 2001), 194, 199. [44]किस्टमेकर, 43. [45]ब्रूस, 19. [46]ह्यूजस, 64. [47]ब्रूस, 24. [48]थामस हेविट, द *एपिस्टल टू द हिब्रू: ऐन इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री,* द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1960), 60. [49]थॉम्पसन ने उदाहरण के रूप में *एनोक* 15:6; *जुबिलीज़* 2:2; 15:31. (थॉम्पसन, 34) दिया। [50]जेम्स बर्टन कॉफ़मैन, *कमैंट्री ऑन हिब्रूज़* (आस्टिन, टैक्सस: फ़र्म फ़ाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1971), 17.

[51]डोनल्ड ए. हैगर, *एनकाउंटरिंग द बुक ऑफ़ हिब्रूज़: ऐन एक्सपोज़िशन,* एनकाउंटरिंग बाइबल स्टडीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर एकेडमिक, 2002), 31. [52]रेयमंड ब्राउन, द *मैसेज ऑफ हिब्रूज़: क्राइस्ट अबव ऑल,* द बाइबल स्पीक्स टुडे (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1982), 35. [53]गुथरी, 71. [54]स्टेडमैन 31. [55]जेम्स टी. ड्रेपर, जूनि., *हिब्रूज़, द लाइफ दैट प्लीज़ज़ गॉड* (व्हीटन, इलिनोय: टिंडल हाउस पब्लिशर्स, 1976), 30.